मूल्य 7/- रु.

सन्त निरंकारी

वर्ष 52 • अंक 10 • अक्टूबर 2008





दिल्ली के इन्दिरा गांधी हवाई अड्डे पर, सद्गुरु बाबा जी व संदीप खिंडा जी का स्वागत करते हुए सी. इन्टरनैशनल एयरपो ऑथोरिटी तथा सिंगापुर एअरलाइंस के प्रोटोकोल ऑफिसर। स.नि.मं. के सचिव श्री खेमराज जी चड्ढा तथा उनके सुपुत्र श्री अनिल चड्ढा भी साथ हैं



सद्गुरु बाबा जी की विश्व कल्याण यात्रा हेतु शुभकामना समागम में भाग लेता हुआ विराट जनसमूह





मुंबई में आयोजित सन्त निरंकारी पत्रिका विभाग की विशाल सभा का दृश्य

सन्त निरंकारी

अहिंसा विशेषांक

वर्ष 52 | अक्टूबर 2008 | अंक 10






सम्पादक (अवैतनिक)
राम कुमार 'सेवक'
कार्यालय : पत्रिका विभाग
सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली–110009
फोनः 27605465-74/224,225 फैक्सः 27608215
हेल्प लाईनः 011–27605151
वैबसाइटः http:www.nirankari.org
ई–मेल : patrika@nirankari.org
snm@nirankari.org

फोटोटाइप सैटिंग एवं मुद्रक
हरदेव प्रिन्टर्स
सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली–110009
कला सज्जा – निरंकारी आर्ट ग्रुप
फोटो : निरंकारी स्टूडियो

वार्षिक चन्दा
भारत/नेपाल : 60रु.
त्रैवार्षिक चन्दा : 150रु.
एशिया/मिडिल ईस्ट : 600रु.
इंग्लैण्ड : £10 यूरोप : €15
अमेरिका : $20, कनाडा/ऑस्ट्रेलिया : $25
जीवन–पर्यन्त (अधिकतम 20 वर्ष)
भारत/नेपाल : 600रु.
एशिया/मिडिल ईस्ट : 8000रु.
इंग्लैण्ड : £125, यूरोप : €200
अमेरिका : $225, कनाडा : $300
एक प्रति 7 रु.

प्रकाशक एवं मुद्रक सी.एल. गुलाटी ने सन्त निरंकारी मण्डल, सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली–9 के लिए, हरदेव प्रिंटर्स, सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली–9 से मुद्रित करवाकर प्रकाशित किया।

नोट : लेखक के विचारों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं

सम्पादकीय

आतंक से अहिंसा की ओर........

देश, विश्व व समाज की बहुत सारी बुराईयों की जड़ें आतंक में निहित हैं। विद्वान बताते हैं कि जिस प्रकार बड़ी मछली, छोटी मछली को खा जाती है, कुछ उसी प्रकार की वृति मानव में भी मौजूद है।

हम अपने आस–पास देखते भी हैं कि जो जितना समर्थ है, वह उतना ही असमर्थ को दबाता है। समय बदलने पर जब असमर्थ, समर्थ हो जाता है, और जो उस समय समर्थ था वह असमर्थ हो जाता है, यानि घड़ी की सुइयाँ *Anti clock vise* (विपरीत दिशा में) घूम जाती हैं तो वही असमर्थ, जो कभी पीड़ित था अर्थात् आतंक का शिकार था, स्वयं पीड़ा देने वाला अर्थात् आतंकवादी बनते देखा गया है।

वास्तव में आतंकी किसी व्यक्ति विशेष का नाम नहीं है, बल्कि प्रवृति का नाम है। आतंक को समाप्त करना है तो व्यक्ति की बजाय प्रवृति को खत्म करना होगा। मनुष्य को यह एहसास कराना होगा कि वह सर्वश्रेष्ठ योनी में उत्पन्न हुआ है, इसलिए मछली में पाया जाने वाला वह दुर्गुण अपनाने की चेष्टा उसे नहीं करनी चाहिए।

लेकिन विपरीत भाव वाले लोगों द्वारा समझाया तो यह जा रहा है कि फलाँ जाति, धर्म, देश, समाज वाले तुम्हारे दुश्मन हैं। उन्हें खत्म कर दो। जितने लोगों को तुम मार दोगे, धर्म की उतनी ही सेवा होगी और यदि तुम स्वयं मारे जाते हो तो जन्नत के दरवाजे तुम्हारे लिए खुले होंगें।

कहते हैं कि यदि झूठ को बार–बार दोहराया जाए तो वह सच लगने लगता है।

तीन ठगों की कहानी हम बचपन से ही सुनते आये हैं। एक आदमी बकरी ला रहा था। ठगों ने उसे हड़पने की सोची। एक–एक कर तीनों रास्ते में खड़े हो गये। पहले एक ने कहा कि यह कुत्ता कहाँ लिये जाते हो? उस आदमी ने कहा कि कुत्ता नहीं बकरी है। आगे दूसरे ठग ने यही कह दिया। सुनकर आदमी ने प्रतिवाद तो किया लेकिन उसे अपने विवेक पर शक होना शुरु हो गया। थोड़ा आगे जाने पर तीसरा ठग भी कुछ ऐसा ही कहने लगा। अब वह आदमी प्रतिवाद न कर सका। वह भली भाँति देख रहा था कि उसके पास बकरी का बच्चा है, कुत्ता नहीं लेकिन उसे लगा कि तीनों ही लोग झूठ तो नहीं देख सकते इसलिए उसने बकरी का बच्चा वहीं छोड़ दिया। झूठ, सच पर हावी हो गया। ठग कामयाब हो गये, विवेक हार गया।



किसी धर्म, जाति, समाज अथवा देश विशेष को दुश्मन इसी प्रकार सिद्ध किया जा सकता है, अन्यथा कोई भी व्यक्ति यह बात समझ सकता है कि यदि किसी पेड़ से कोई पत्ता तोड़ दिया जाए तो उसे फिर वहाँ जोड़ा नहीं जा सकता, इसी प्रकार यदि किसी को मार दिया जाए तो हत्यारा उसे जिन्दा नहीं कर सकता। जिस जीवन को इन्सान दे नहीं सकता, फिर उसे छीनने का उसे क्या अधिकार है?

निरंकारी बाबा जी फरमाते हैं कि **धर्म जोड़ने का नाम है, तोड़ने का नहीं।** धर्म तो मनुष्य को मनुष्य से जोड़ता है फिर हिंसा व आतंक, धर्म के सिद्धान्त कैसे हो सकते हैं? धर्म का आधार घृणा, संकीर्णता, हिंसा हो ही नही सकते हैं। धर्म का आधार तो प्रेम, शान्ति व अहिंसा ही हो सकती हैं।

परमात्मा के ही कुछ भ्रमित बच्चे, जो अपने ही भाईयों को आतंकित करने में लगे हैं, उनके लिए परमात्मा से प्रार्थना है कि उन्हें सदबुद्धि आये और वे धर्म की सही पहचान को मन–वचन–कर्म से स्वीकार करें तभी मानवता का भला हो सकता है।

यह एक निश्चित तथ्य है कि विजय हमेशा सत्य की ही होती है, असत्य की नहीं। अत्याचार व आतंक न कभी विजयी हुआ है, और न हो सकता है, इसलिए 'जियो और जीने दो'' का सिद्धान्त अपनाना ही श्रेयस्कर है। मानव व मानवता को बचाने के लिए अहिंसा की प्रवृति ही सुदृढ़ आधार हो सकती हे। पक्षी चाहे जितनी भी ऊँचाई तक क्यूँ न उड़ जाये अन्ततः उसे जमीन पर आना ही पड़ता है, आतंकी प्रवृति को भी अहिंसा व शान्ति की ओर ही लौटना होगा। यथार्थ यही है।

– राम कुमार 'सेवक'
rksewak@yahoo.co.in

विश्वास के परिणाम

❑ अजय 'बेजोड़' (तरावड़ी)

बात आज से लगभग 20 वर्ष पहले की है। तब दास दसवीं कक्षा का छात्र था। घर की आर्थिक स्थिति साधारण थी। दास के पिता जी की तरावड़ी के निकट एक गाँव में परचून की दुकान थी। गाँव तरावड़ी से लगभग 12 किलोमीटर की दूरी पर था।

हम कुल 6 भाई–बहिन थे। पूरे परिवार की जिम्मेदारी पिता जी के कंधों पर ही थी। पिता जी साईकिल द्वारा ही सामान लेकर वहाँ आते–जाते थे। दास भी कभी–कभी उनको सामान इत्यादि पहुँचाने के लिए वहाँ जाया करता था।

अचानक एक दिन दुकान पर जाते हुए पिता जी का रास्ते में ही एक्सीडैंट हो गया। बाईं टांग की हड्डी टूट गयी। घर के गुजारे का एकमात्र साधन दुकान ही थी और उसको चलाने की जिम्मेदारी अब दास के कंधों पर आ गई थी। इसी बीच दास का दसवीं कक्षा का *Result* (परिणाम) आ गया। दास फर्स्ट डिवीजन लेकर कक्षा में उत्तीर्ण हुआ। ज्ञान की प्राप्ति हुए अभी थोड़ा ही समय हुआ था, लेकिन माता–पिता व परिजनों के ज्ञानवान होने के कारण बचपन से ही गुरू पर विश्वास के संस्कार मिल गये थे और भक्ति रूपी अंकुर धीरे–धीरे हृदय रूपी भूमि पर पनपने लगे थे। "प्रभु जो करता है, ठीक करता है" की भावना मन में कूट–कूट कर भरी हुई थी, अतः दास मन से उक्त जिम्मेदारी को संभालने के लिए तैयार हो गया था। अब दास अकेला दुकान पर जाता था और कभी–कभी दो–तीन दिन व रातें भी वहीं बितानी पड़ती थीं, लेकिन मन में सद्गुरु के प्रति असीम विश्वास होने के कारण सब कुछ सहज ही लगने लगा था। पढ़ाई के प्रति बेहद रूचि थी लेकिन उस अवस्था में पढ़ाई जारी रख पाना सम्भव नहीं था। एक दिन साईकिल से दुकान पर जाते हुए, रास्ते में ही मन में ध्यान आया कि हे सत्गुरु, तू कितना दयालु है। तूने अगर एक रास्ता बन्द किया तो साथ ही दूसरा खोल भी दिया, यानि कि पिता जी का एक्सीडैंट जरूर हुआ लेकिन इसी बीच मुझे जिम्मेदारी संभालने की सामर्थ्य भी बख्श डाली और अचानक सत्गुरु के प्रति असीम श्रद्धा से मन झुक गया। हृदय की भावना ने निम्नांकित शब्दों का रूप ले लिया –

मैं तेरा शुकर करां मेरे साहिबा
मेरी जिंदगी ने सांईयाँ
तैथों रहमतां ने पाईयां
मेरी सोच तों परां मेरे साहिबा...............

दास हैरान हो गया कि किस तरह यह रचना अपने आप ही मेरे हृदय में उतरती जा रही थी। न जाने कहाँ से ये शब्द आ रहे थे और मैं उन्हें मन ही मन गाता भी जा रहा था और खुशी से आँखों से आँसू भी निकलते जा रहे थे। दुकान पर पहुँचते ही, सबसे पहले दास ने वो शब्द एक कागज पर उतारे और इस तरह सद्गुरु की कृपा

द्वारा इस रचना का जन्म हुआ।

हालाँकि गीत तो दास पहले भी लिखता था व सत्संग में गाता भी था लेकिन इस रचना के जन्म होने के बाद तो दास का जीवन ही बदल गया। इसी शुकराने के भाव ने ज़िन्दगी में फिर कभी पीछे मुड़कर देखने ही नहीं दिया और देखते ही देखते पर्वत जैसे लगने वाले दुख राई में परिवर्तित हो गए। इसी रचना ने दास को कालान्तर में देश–विदेश में लोकप्रिय कर दिया। दास मन ही मन सद्‌गुरु का शुकराना अदा करता रहता है जिसने स्वयं हृदय में उतर कर इस रचना को जन्म दिया और प्रशंसा दास को दिलाई।

सद्‌गुरु की कृपा के सहारे पिता जी की गैर हाजिरी में दास दुकान को जैसे–तैसे चला रहा था। पिता जी को डाक्टर ने छः महीनों तक बैड–रेस्ट (पूर्ण विश्राम) की सलाह दी थी।

गाँव के जिस मोहल्ले में हमारी दुकान थी वहाँ यूँ तो मेहनत–मजदूरी करके खाने वाले लोग ही रहते थे लेकिन कुछ लोग ऐसे भी थे जो पेशे से तो ड्राइवर थे लेकिन ईमानदार नहीं थे। ट्रकों के माल में से वे कुछ माल चोरी कर लेते थे और उसे बेचकर अतिरिक्त पैसा बनाते थे। इस तरह वो 5–6 महीनों के बाद गाँव आते और फिर उसी बेईमानी से कमाए हुए पैसे से एक–दो महीने विलासी जीवन बिताते। रोज शराब पीते, जुआ खेलते और भी ऐसे ही समाज विरोधी व्यसनों पर पैसा उड़ाते। उन्हीं में से एक इन्सान, जो हमारी दुकान पर अक्सर आया–जाया करता था, उसने काफी सामान उधार ले रखा था, एक दिन शराब पीकर दुकान पर आया व दास से और उधार मांगने लगा। दास ने बेहद प्यार से उसे इन्कार कर दिया और कहा कि पहले पिछला उधार अदा करो। बस इसी बात से वो भड़क गया और जाते–जाते दास को धमकी दे गया कि शाम के समय अपना ध्यान रखना। मैं दुकान पर आऊँगा और तुम्हें देख लूंगा।

वो इन्सान बेहद खतरनाक था। बात–बात पर लड़ना उसकी रोज की ज़िन्दगी का हिस्सा था। पुलिस थाने में उसकी रातें अक्सर कटती ही रहती थीं। गाँव के सभी लोग उससे डरते थे। मोहल्ले वालों ने दास को सलाह दी कि दुकान को बन्द करके अपने शहर लौट जाओ। दास ने मन ही मन सद्‌गुरु को स्मरण किया और अपने कार्य पर डटा रहा। ध्यान आया कि जब सर्वशक्तिमान प्रभु मेरे साथ है तो फिर इस जैसे लोग मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते।

जैसे–जैसे शाम का समय करीब आता जा रहा था, दिल की धड़कनें बढ़ती जा रही थीं। समय गुजरता गया और कुछ भी न हुआ। बाद में ज्ञात हुआ कि वो शख्स, जो मुझे मारने आ रहा था, अपने ही किसी दोस्त के साथ शराब पीते हुए उलझ गया और दोनों ने एक–दूसरे को लहूलुहान कर दिया। किसी ने पुलिस को खबर कर दी और पुलिस ने तुरन्त दोनों को गिरफ़्तार करके जेल में डाल दिया। इस प्रकार जो मुझे धमकी देकर गया था, खुद ही जैसे अपने बनाये गड्‌ढे में गिर गया। यह सद्‌गुरु पर विश्वास का ही सुपरिणाम था। दास सद्‌गुरु के इस चमत्कार को देखकर दंग रह गया लेकिन इससे भी बड़ा चमत्कार तब हुआ जब वो शख्स जेल से छूट कर आया और मुझसे बड़े प्यार से मिला। उसने कहा कि जाने कौन सी ऐसी शक्ति थी जिसने मुझे तुम्हारे पास उस दिन आने नहीं दिया और मुझे अपने ही दोस्त के साथ लड़ने को मजबूर कर दिया।

दास बहुत ध्यान से उसकी बातें सुन रहा था और सद्‌गुरु का मन ही मन शुकराना अदा कर रहा था कि विपरीत हालातों से बचाव कर दिया। निरंकार प्रभु ने कुछ ऐसी कृपा की कि उस दिन के बाद वही शख़्स दास का हमदर्द हो गया और कितनी ही मुसीबतों में उसने मेरा साथ दिया। सद्‌गुरु ने जैसे उसका हृदय ही बदल डाला था। ■

आत्ममंथन
अपना ज्ञान बढ़ाइये

सामयिक/ऐतिहासिक/साहित्यिक

1. माता अमृतकौर जी, जिनका पिछले दिनों देहान्त हुआ, का निवास स्थान किस शहर में था?

अ–दिल्ली ब–अमृतसर

स–यमुनानगर द–फर्रुखाबाद

2. निरंकारी राजमाता कुलवन्त कौर जी के पिता जी का नाम क्या था?

अ–मन्ना सिंह जी ब–मनमोहन सिंह जी

स–महताब सिंह जी द–महेन्द्र सिंह जी

3. 'नूर ही नूर' किस कवि की रचना है?

अ–लाभ सिंह जी ब–प्रो. पुरी

स–जोगिन्दर सिंह जी 'नूर' निरंकारी

द–पूर्ण प्रकाश जी 'साक़ी'

4. निरंकारी रेडियो – 'वॉइस डिवाइन' का प्रसारण प्रतिमाह कितने समय के लिए होता है?

अ–एक घंटा ब–दो घंटे

स–आधा घंटा द–पन्द्रह मिनट

5. जगतमाता बुद्धवन्ती जी की शिक्षा–दीक्षा कहाँ हुई थी?

अ–जालन्धर ब–लत्तीफाल

स–कैमलपुर द–ग्राम–नीला

6. सद्‌गुरु बाबा हरदेव सिंह जी के विचारों को पहली बार किस पुस्तक के रूप में संग्रहित किया गया था?

अ–दर्पण ब–देव दर्शन

स–गुरुदेव हरदेव द–विचार प्रवाह

7. ब्रह्मलीन महात्मा हरि राम 'स्वामी' जी का मिशन को योगदान मुख्यतः किस रूप में रहा है?

अ–प्रबन्धक ब–प्रचारक

स–गीतकार द–लेखक

धार्मिक/आध्यात्मिक

8. 'वैशेषिक सूत्र' नामक ग्रन्थ की रचना किस महान ऋषि ने की थी?

अ–कणाद ब–पातंजलि

स–अगस्त्य द– दधीचि

9. कार्तिकेय के माता–पिता कौन देव थे?

ट–ब्रह्मा–ब्रह्माणी ब–इन्द्र–शची

स–शिव–पार्वती द–राम–सीता

10. खलीफा कौन होता है?

अ–हजरत मुहम्मद साहब की गद्दी का उत्तराधिकारी ब–अरब का राजा

स–धार्मिक प्रवक्ता द–नमाज पढ़ाने वाला

11. चार्वाक का दर्शन किस प्रकार का है?

अ–अनीश्वरवादी ब–ब्रह्मवादी

स–समाजवादी द–जड़वादी

12. तथागत किस महान विभूति के नाम के तौर पर इस्तेमाल किया जाता है?

अ–चैतन्य महाप्रभु ब–सन्त ज्ञानेश्वर

स–महात्मा बुद्ध द–श्री कृष्ण

13. तीर्थकर का सम्बन्ध किस धर्म से है?

अ–तिब्बती ब–जरथुस्त्र

स–जैन द–यहूदी

नैतिक/वैचारिक

14. 'सेवा को दोऊ भले', के उत्तर में किन्हें सेवा का पात्र माना गया है?

अ–एक सन्त, एक राम

ब–एक देवता, दूसरा–दानव

स–नर व नारी द–नेता व जनता

15. मोह के विकार को किस गुण में बदला जा सकता है?

अ–भक्ति ब–प्रेम स–शान्ति द–आनन्द

(सही हल अन्यत्र दिये गये हैं)

क्षमा करना सीखें

❒ डॉ. बी.एस.शैमल

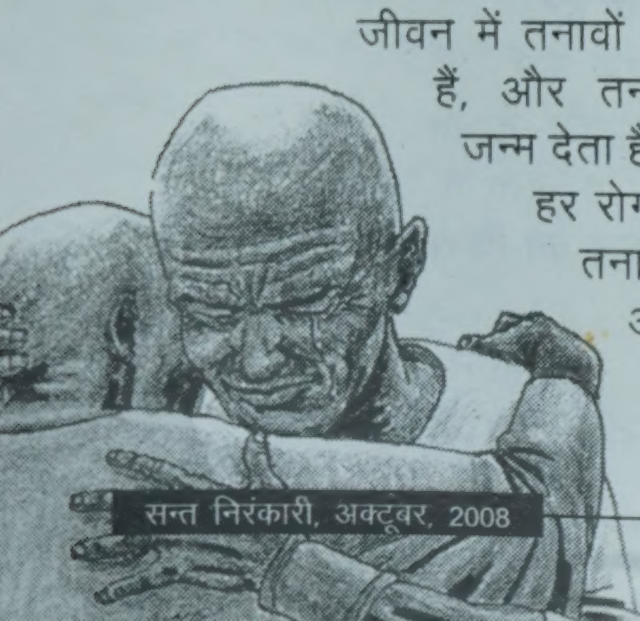
क्षमा एक ऐसा गुण है, जो हर किसी में नहीं हो सकता, क्योंकि इसके लिए विशालता, नम्रता, सहनशीलता की आवश्यकता होती है। जो विशालता के गुण से युक्त तथा सहनशील होता है, दूसरे को प्यार–नम्रता की भावना से अपना भाव समझाता है, वही इस गुण का पात्र हो सकता है। क्षमाशील को क्रोध नहीं आता, इस प्रकार वह तनावों से बचा रहता है। वह स्वयं भी शान्त रहता है तथा औरों को भी शान्ति प्रदान करता है।

क्षमा करने से हमारे मन में बसा हुआ क्रोध शान्त होता है। बदले की भावना, वैर–ईर्ष्या, नफ़रत आदि की नकारात्मक भावनाओं का अन्त होता है। इससे हमारे मनों में बसे हुए रोग (ईर्ष्या, क्रोध, द्वेष आदि) शान्त हो जाते हैं।

क्षमा मांगने और क्षमा करने से हमारे अन्दर अहंकार की मात्रा खत्म हो जाती है तथा मन में विशालता उत्पन्न होती है जिससे हम दूसरों के प्रति उदार हो सकते हैं।

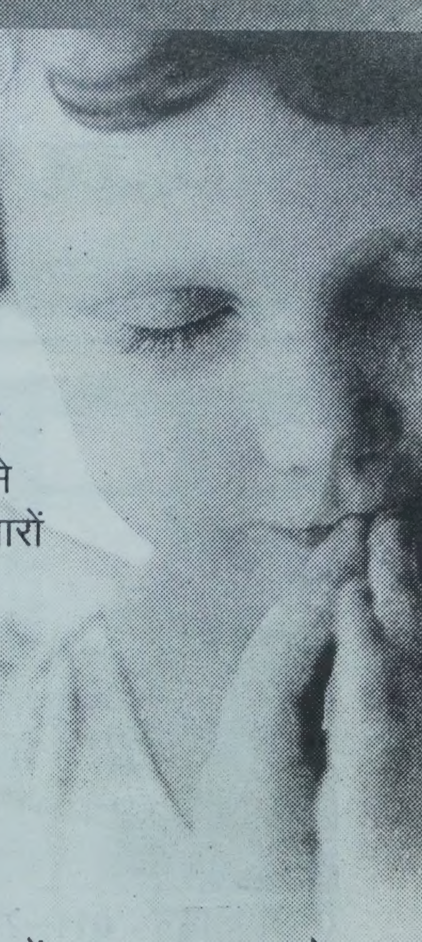
क्षमा करना, कायरता नहीं बल्कि वीरता का सूचक है। यह वीरों का आभूषण है। यदि हम क्षमा को अपना लेते हैं तो अपने जीवन की बहुत सी विसंगतियों से बच सकते हैं। जो हमारे जीवन में तनावों को जन्म देती हैं, और तनाव रोगों को जन्म देता है।

हर रोग की शुरूआत तनाव से होती है और तनाव की शुरूआत क्रोध से होती है। क्षमा करने से पहले ही क्रोध में कमी आती है। अक्रोध की स्थिति ही तो वास्तव में क्षमा के भाव की उत्पत्ति की उर्वरा भूमि है। क्षमा भाव उदय होते ही तनाव कम होता है और इस प्रकार अनेकों रोग जड़ से खत्म हो जाते हैं, फिर हम स्वस्थ जीवन जी सकते हैं।



यदि हममें क्षमा धारण करने का साहस नहीं है तो हिंसक जीवन जीने पर मजबूर होना पड़ेगा और हमारा जीवन क्रोध, तनाव व हिंसा से ग्रस्त हो जायेगा। जिससे हम विनाश की ओर अग्रसर होंगे। स्वयं को विनाश से बचाने के लिए क्षमा करना सीखें। परस्पर भाईचारे की भावना को मन, वचन व आचरण में बसाकर मानवता को अपनाएं और अपने जीवन को सुखद अहसास की ओर अग्रसर करें। ■

पत्रिका का चन्दा (शुल्क) जमा करना भी एक सेवा है। कृपया यथासमय चन्दा जमा करके पत्रिका के प्रचार–प्रसार द्वारा, सन्त निरंकारी मिशन का सन्देश जन–जन तक पहुँचाने में योगदान दें – सम्पादक



एक याचना एक प्रार्थना

❑ **ए.एल.मेहता** (बागडोगरा)

एक इन्सान बहुत तेजी से फावड़ा चला कर जमीन खोद रहा था। इसी बीच उधर से कुछ लोग गुजरे। पूछ लिया कि इतनी जतन से खाई क्यों खोदी जा रही है। उस इन्सान का उत्तर चौंकाने वाला था। उसने कहा कि उसके घर में आग लगी है, उसे बुझाना जरूरी है इसलिए वह कुआँ खोद रहा है।

सुनने वाला हँस पड़ा क्यों कि आग लगने पर कुआँ खोदना बुद्धिमानी नहीं। उतनी देर में घर तो जलकर राख हो चुका था।

लगभग ऐसी हालत आज दुनिया की है। हम भी बचपन खेल में, जवानी नींद में बिताकर अब बुढ़ापे में भगवान की भक्ति करने की बात कर रहे हैं। सिर्फ बात से क्या बनने वाला है। घर जल गया तो कुआँ खोदा जा रहा है। अब तो हालत यह है –

लटकन लागो चाम
काँपन लागो दाँत।

अब व्यर्थ खोने के लिए समय नहीं है। जो करना है, तुरन्त करना होगा। ब्रह्मज्ञान प्राप्त करके जुट जाओ भक्ति में। कुआँ खोदने की बजाय ज्ञान का जल प्राप्त करो, सद्‌गुरु से।

सन्त–महात्माओं ने पते की बात कही है। नाम जपते हैं, काम नहीं चलेगा, नामी का पता–ठिकाना जानना जरूरी है। कण–कण में बसे राम को जपना नहीं, जानना है। नामों से काम चलता तो हमारा घर–संसार सुखी हो जाता। घर के सभी सदस्य, बैठकर रुपयों का जाप, कुर्सियों का जाप, रोटियों का जाप करते और घर मालामाल हो जाता। ऐसा कभी नहीं हुआ और न होना है। धन पाना है तो कारोबार करना है। विद्या पानी है तो परिश्रम करना है। प्रभु का नाम लेने मात्र से प्रभु को पाना संभव नहीं है। इसे पाए बिना, जाने बिना प्रतीति नहीं हो सकती है। सन्तों के कथन हैं –

बिना प्रतीति के प्रीति हो नहीं सकती है। बिना प्रीति के भक्ति बालू से तेल पाने की आशा मात्र है जो सम्भव नहीं है।

हमारे मनों में एक भ्रान्त धारणा बैठ गई है कि कलियुग में भक्ति के कुछ और नियम हैं। सन्तों ने कहा है – जैसे प्रभु परमात्मा तीन काल सच है वैसे ही इसकी भक्ति की विधि भी चारों युगों में एक जैसी है। द्वापर में भगवान श्री कृष्ण जी की कृपा से अर्जुन ने यह ज्ञान युद्धक्षेत्र में पाया था। त्रेतायुग में भगवान श्रीराम जी की कृपा से भक्त हनुमान ने यह ज्ञान पाया था। सतयुग में भक्त प्रह्लाद को अग्निकुंड में से भी बचाने वाला यही प्रभु–निराकार था। आज कलियुग होने के कारण नियम नहीं बदले। जिन वेदों–पुराणों, धर्मशास्त्रों की दुहाई हम दे रहे हैं, जिन वाणियों के पाठ हम कर रहे हैं उन्हीं शिक्षाओं को आचरण में लाने की आवश्यकता है। तब हमारे कल्याण के जो साधन बताये गये थे, वे ही साधन आज भी उपयोगी हैं। युग बदलने से नियम नहीं बदल जाते। परमात्मा से आत्मा का नाता जुड़ने पर ही आत्मा का कल्याण होता रहा है, यह यथार्थ वाणी है। आज के पैग़म्बर साफ कहते हैं कि यदि कोई समझे कि कलियुग होने के कारण किसी पद विशेष या कुर्सी विशेष या व्यापार या शारीरिक ताकतों से आत्मा का कल्याण होगा, तो ऐसा नहीं है।

यह शाश्वत सत्य है कि प्रभु–परमात्मा अचल, अटल, अविनाशी सत्ता है तो आत्मा का भला भी इस परमपिता से मिलने पर ही होगा और कोई रास्ता नहीं है, अतएव हमारे लिए सन्तों की वाणियों पर अमल करना जरूरी है। प्रभु–निराकार का ज्ञान सद्‌गुरु बाबा हरदेव सिंह जी महाराज की चरण–शरण होकर प्राप्त करना जरूरी है। यही भव सागर से पार उतारने वाली भक्ति रूपी नौका के आज के नाविक हैं। इस भवसागर से पार जाना है तो हमें सद्‌गुरु से मिलकर इस ज्ञान को पाना है। यह विश्वास, यह दृढ़ता हमारे मनों में हो, यही एक प्रार्थना हमारी बनती है। ●

पत्रिका विभाग की हैल्पलाइन आरम्भ



निरंकारी पत्र–पत्रिकाओं के बढ़ते प्रसार के साथ–साथ सदस्यों तथा जनसाधारण की सुविधा के लिए पत्रिका विभाग में पहले से उपलब्ध टेलीफोन नम्बरों के अतिरिक्त सीधी टेलीफोन सेवा **(हैल्प लाइन : 011–27605151)** आरम्भ की गई है जिस पर 'सन्त निरंकारी', 'हँसती दुनिया' व 'एक नज़र' से सम्बन्धित निम्नलिखित अथवा अन्य जानकारी प्राप्त की जा सकती हैः–

★ पत्रिकाओं की पूरी जानकारी–नई सदस्यता प्राप्त करना, पत्रिका की अवधि, चन्दे की रकम तथा उसे जमा करवाने की विधि पूछने के लिए,

★ पुराने सदस्यों को हैल्प लाइन पर जानकारी प्राप्त करने से पहले पत्रिका का नाम, चिट नं/रसीद नं. बताना होगा,

★ अपना पता बदलवाने या उसमें संशोधन करवाने के लिए,

★ पत्रिका की भाषा या एक पत्रिका को दूसरी पत्रिका में बदलवाने के लिए,

★ पत्रिका देरी से प्राप्त होने या नहीं प्राप्त होने की सूचना देने के लिए।

नोटः– पत्रिका विभाग की यह हैल्प लाइन सप्ताह के कार्य दिवसों (Working Days) में सुबह 9 बजे से रात्रि 8 बजे तक चालू रहेगी। इसके पश्चात् सम्पर्क करने वालों का सन्देश रिकार्ड हो जाएगा जिस पर अगले दिन कार्यवाही की जाएगी। यह कम्प्यूटराइज्ड सीधी लाइन है जिस पर देश–विदेश के सभी लोग सम्पर्क कर सकते हैं।

– सी. एल. गुलाटी
प्रभारी, पत्रिका विभाग

काव्य प्रवाह

गुरू के चरणों में......

❑ **अवधेश पाण्डेय 'अवधेश'** (गोला गोकर्णनाथ)

कितना है आनन्द गुरू के चरणों में।
भक्ति का मकरन्द गुरू के चरणों में।
फँसा हुआ जो जीव भ्रमों के दल–दल में,
वो होता स्वच्छन्द गुरू के चरणों में।
करो तपस्या भले करोड़ों वर्षों तक,
मिलता आनन्दकंद गुरू के चरणों में।
पापी, कुटिल, कलंकी, दीन–दरिद्री सब,
होते हैं सानन्द गुरू के चरणों में।
गणिका, गीध, अजामिल, सदन कसाई की,
खुल गयी किस्मत बन्द, गुरू के चरणों में।
मीरा, तुलसी, सूर आदि की कौन कहे,
कटे कोटि के फन्द गुरू के चरणों में।
उदित हुआ सौभाग्य गुरू हरदेव मिले,
मिटी मनों की गन्द गुरू के चरणों में।
मुट्ठी में 'अवधेश' हैं अब भक्ति, मुक्ति,
दूर हो गये द्वन्द्व गुरू के चरणों में।

गीत माधुर्य

❑ **राजकमल** (पानीपत)

रहबर रहमत है तेरी, मुझपे भी तरस है आया,
है कौन वो अवगुण मेरा, दातार जो तुझको भाया

तू मात–पिता है मेरा, तू ही है मेरा हमदम।
परछाई भी साथ ना देती, तू साथ मेरे है, हरदम।
तेरी ही दया से महका, जीवन था जो मुरझाया,
है कौन वो............
मैं जब–जब ठोकर खाऊँ, हर बार मुझे तू संभाले।
जैसे बालक को माता, अपनी ममता से पाले।
ऐसे ही गोद में अपनी, मुझको भी तूने झुलाया,
है कौन वो.................
जीवन बदला है तूने, तुझसे पहचान है मेरी।
रहते थे आँख में आँसू, अब तू मुस्कान है मेरी।
कीचड़ में गिरे हुए को, तूने दे हाथ उठाया,
है कौन वो.................
मैं क्या था याद रहे ये, अपनी औकात ना भूलूँ।
जो प्यार दिया है तूने, मैं ये सौगात ना भूलूँ।
मुझ 'राजकमल' पापी को, सन्तों के बीच बिठाया,
है कौन वो..............
तर्ज : *तुझे सूरज कहूँ.........(एक फूल दो माली)*

अहिंसा का मूल आधार

■ शंकर दास निरंकारी (महेश नगर, जयपुर)

मन–वचन–कर्म से सभी मानव प्राणी, जीव–जन्तु आदि को शारीरिक, मानसिक और आत्मिक वेदना न पहुँचाना, समानता के आधार पर सभी के साथ आत्मभाव का व्यवहार करना, मन में सभी के साथ इन्सानों व जीव–जन्तुओं के लिए (जो दिखाई दे रहे हैं, और जो दिखाई नहीं दे रहे हैं) भी दया, करुणा, प्यार, नम्रता, सहनशीलता आदि का भाव रखना ही अहिंसा कहलाती है।



अहिंसा एक आध्यात्मिक विचारधारा है, जिसमें 'जियो और जीने दो' की पवित्र भावना की ओर प्रवाह होता है। यदि अहिंसा हमारे आचरण में आ जाये तो खुशी का जैसे गुलशन खिला देती है। इसके परिणामस्वरूप जीवन में नई चेतना व जागरूकता का आविर्भाव होने लगता है। आत्मबल, आत्मविश्वास और आनन्द की अनुभूति होने लगती है। इससे मनुष्य स्वयं भी सुखी होता है तथा उसके सम्पर्क में आने वाले भी सुखी हो जाते हैं।

यदि मानव हिंसा पर उतर जाये तो यह संसार व जीवन को नरक की ओर धकेल देती है। इससे इन्सान स्वयं भी दुखी होता है, और दूसरों को भी दुखी करता है। इसके वशीभूत होकर अनमोल मानव जीवन काल की भेंट चढ़ जाते हैं।

संसार में प्रत्येक मानव व जीव–जन्तु जीना चाहता है। मरना कोई भी नहीं चाहता इसलिए हे मानव, तू किसी का भी हनन मत कर। वास्तव में जिसका तू हनन कर रहा है, वह कोई और नहीं, तू ही है। सबकी आत्माएं एक ही परमपिता परमात्मा की अंश हैं। महात्मा कहते हैं – यदि कोई व्यक्ति तुम्हारे बायें गाल पर थप्पड़ मारे तो दायाँ गाल भी उसकी तरफ कर दो। महात्मा तो यहाँ तक कहते हैं कि अहिंसा न मारने में ही नहीं है, वरन् विपरीत प्रतिरोध और प्रतिक्रिया भी न करने में है।

अहिंसा का सिद्धान्त व्यवहार में भी उतना ही प्रमाणिक है, जितनी कि आध्यात्मिकता। जो चीज आध्यात्मिकता के आधार पर सत्य है, वह व्यवहारिक आधार पर भी सत्य ही है। बिना सत्य के अहिंसा की खोज असम्भव है। सत्य के बाद महानतम व सक्रिय शक्ति अहिंसा की ही है। हमारे मन में प्राणीमात्र के लिए तनिक भी दुर्भाव नहीं हो अर्थात् जहाँ वैर, ईर्ष्या, निन्दा–नफ़रत, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, स्वार्थ, मान–अपमान आदि का अभाव होता है, वहाँ अहिंसा का भाव होता है। जब तक मानव में सत्य की रोशनी जाग्रत नहीं होती तब तक मानव हीन भावनाओं से उबर नहीं पाता। जैसे ही मानव में सत्य की रोशनी हो जाती है, हीन भावना स्वतः ही समाप्त हो जाती है। उसे अपने आपकी पहचान हो जाती है। फिर उसे सभी अपने लगने लगते हैं। सम्पूर्ण अवतार बाणी में लिखा है –

एक ज्योति है सबके अन्दर नर है चाहे नारी है।
शूद्र, वैश्य और ब्राह्मण–क्षत्रिय प्रभु की रचना सारी है।

जब मानव के मनो–मस्तिष्क में एक मात्र सत्य निरंकार प्रभु की समझ बैठ जायेगी तो उसका आचरण सत्य से परिपूर्ण होगा। मानवता, आपसी भाईचारा, सहनशीलता, प्रीत, नम्रता, समदृष्टि इत्यादि गुण उसके आचरण में समाहित होंगे। इस स्थिति में अहिंसा उसका स्वाभाविक गुण होगा।

जहाँ अहिंसा नहीं है वहाँ हिंसा प्रवेश करेगी। प्रकृति का नियम है कि कभी खालीपन नहीं रहता। एक जायेगा तो दूसरा आयेगा। जब अहिंसात्मक आदर्श विदा हो जायेंगे तो हिंसात्मक अवगुण कब्जा जमायेंगे। ज्यों–ज्यों आदमी हिंसक बनेगा उसके कार्य पापों से परिपूर्ण होंगें। अहिंसा दूर तक दिखाई नहीं देगी। ऐसे मनुष्य को भी ब्रह्मज्ञानी सन्त निरंकार–प्रभु के अंग–संग होने की प्रेरणा देते हैं। इससे हिंसक प्रवृत्तियाँ मानव से दूर रहती हैं।

अहिंसा न केवल आपस में सहानुभूति, सौहार्द और शान्ति का वातावरण प्रस्तुत करती है वरन् आज मुँह बाये खड़ी अराजकता और आणविक युद्ध जैसी भयावह समस्याओं का सहज समाधान भी करती है। हिंसा से जितना मानव का नाश हुआ है, उसका संरक्षण केवल अहिंसा के आधार पर ही हो सकता है। समाज में व्याप्त कुरीतियाँ, कर्मकाण्ड, भ्रमों–अन्धविश्वासों का भी निरंकार प्रभु को अंग–संग मानकर, अहिंसा को धारण करके दूर किया जा सकता है।

अहिंसा के बहुमुखी आयाम –

- अहिंसा वह कवच है, जिसे धारण करने वाला व्यक्ति भ्रान्तियों और अफवाहों के परिणामस्वरूप उत्पन्न होने वाली उत्तेजना के नुकीले तीरों से आबद्ध नहीं हो सकता है।
- अहिंसा वह मर्हम है, जो मानसिक आघातों से बने घावों को अविलम्ब भर सकता है। अहिंसा वह सेतु है, जो पारस्परिक दूरियों को पाटकर एक समतल धरातल का निर्माण करती है।
- अहिंसा वह पुरुषार्थ है, जो अधिकार की भावना को समाप्त कर कर्तव्य बोध की प्रेरणा देता है।
- अहिंसा वह निधि है, जो रिक्तियों को भरकर व्यक्ति को परिपूर्ण बना देती है।

सन्त निरंकारी मिशन के अधिष्ठाता युगदृष्टा सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी महाराज अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर ब्रह्मज्ञान की दात से, मानव से मानव को जोड़ रहे हैं। इस प्रकार मानव को उसके अपने अस्तित्व की पहचान करा रहे हैं। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड चराचर जगत में एक प्रभु की ही सन्तानें विचरण करती हैं। हमारा रचनहार एक है तो हम अलग–अलग क्यों हैं। यदि हम दूसरों को सुख पहुँचायें तो हमें भी सुख ही प्राप्त होगा, यही भाव अहिंसा का सुदृढ़ आधार हो सकता है। ●

जीभ पर नियंत्रण

हजरत मुहम्मद साहब से किसी ने पूछा, "ऐ अल्लाह के रसूल, अल्लाह की राह पर चलने के लिए हमारे वास्ते सबसे जरूरी हिदायत क्या है?"

पैग़म्बर ने अपनी जीभ को स्पर्श करके कहा कि यह जीभ ही सारी बुराईयों की जड़ है। जिन्हें अपनी जीभ पर काबू नहीं और जो अपनी ज़ुबान से इन्सान–इन्सान के बीच नफ़रत फैलाते हैं, अल्लाह उन्हें सीधे दोज़ख़ की आग में फेंक देता है।

(साभार)

अहिंसा की ओर

इस धरती पर दो तरह की ताकतें है - तलवार की ताकत और आत्मा की ताकत। जैसे-जैसे समय गुजरता जाएगा, तलवार की ताकत पर आत्मा की ताकत हावी होती जाएगी।

- नेपोलियन बोनापार्ट

अहिंसा से सुरक्षा

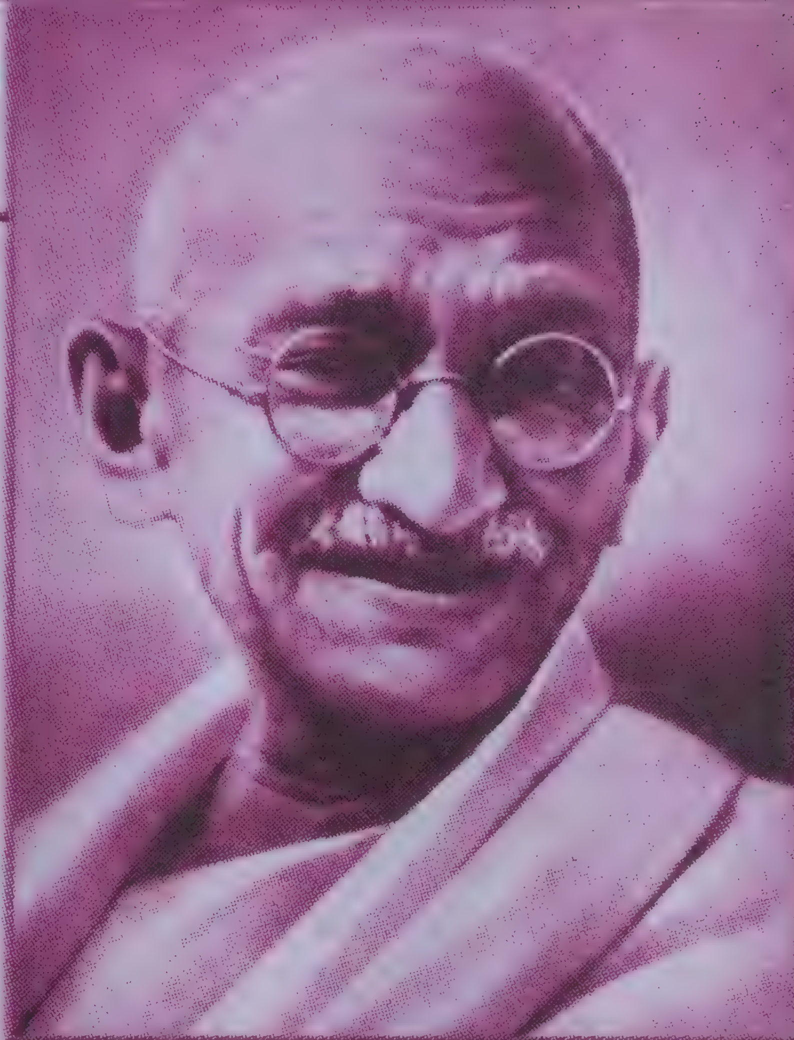
एक बार महात्मा गाँधी को प्रवासियों पर हो रहे अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाने के कारण जोहांसबर्ग की जेल में बन्द कर दिया गया, लेकिन थोड़े ही दिनों के बाद उन्हें रिहा कर दिया गया। कुछ शरारती तत्वों ने यह अफवाह फैला दी कि गाँधी जी ने सरकार से समझौता कर लिया है और प्रवासियों पर हो रहे अत्याचारों के खिलाफ आवाज न उठाने का वचन दिया है।

यह खबर फैलते ही वहाँ के प्रवासियों में गाँधी जी के प्रति नफ़रत और गुस्सा फैलने लगा। कई लोगों ने गाँधी जी को जान से मारने की धमकी भी दे डाली।

गाँधी जी को गरीबों की लड़ाई लड़ते देख वहाँ के एक धनाढ्य गोरे मि. हरमन इतने अधिक प्रभावित हुए कि वे हर समय उनके साथ रहने लगे। उन्हें जब मालूम हुआ कि गाँधी जी को जान से मारने की धमकी दी जा रही है तो वे गाँधी जी की सुरक्षा के लिए चिन्तित हो गए। किसी अनहोनी वारदात से निपटने के लिए उन्होंने एक नई पिस्टल खरीदी और उसे हर समय अपनी जेब में रखने लगे।

एक दिन गाँधी जी ने उनकी पिस्टल देख ली। उन्होंने पूछा, "मिस्टर हरमन, यह पिस्टल अपने साथ क्यों रखते हो?"

हरमन बोले, "गाँधी जी, आपकी जान को खतरा है इसलिए आपकी सुरक्षा के लिए इसे रखना जरूरी है।" गाँधी जी मुस्कुराकर बोले, "कितने भोले हो हरमन साहब। मुझे कौन मारेगा? मुझे मारकर किसी को क्या मिलेगा? फिर आपकी पिस्टल से एक ही आदमी की ही सुरक्षा हो सकती है। यहाँ तो हजारों लोगों की ज़िन्दगी की सुरक्षा हर समय खतरे में होती है। जानते हो उन्हें कौन बचाता है?" कुछ रुककर गाँधी जी बोले, "उन्हें भगवान बचाते हैं इसलिए ईश्वर पर भरोसा करो और उनके अधिकार को छीनने की कोशिश मत करो। आपको मेरे साथ रहना है तो निहत्थे रहना होगा। हरमन लज्जित हो गए। उन्होंने महात्मा गाँधी की अहिंसाप्रियता व आत्मविश्वास को हृदय से प्रणाम किया तथा हथियार रखने हेतु क्षमा याचना भी की। (साभार)



अहिंसा का तप

प्राणियों को जान से न मारना, इतना ही इस व्रत के लिए काफी नहीं है। अहिंसा का मतलब है– बहुत छोटे जीव–जन्तुओं से लेकर मनुष्य तक सब जीवों के लिए समभाव–बराबरी का, अपनेपन का भाव।

इन व्रतों का पालन करने वाला घोर अन्याय करने वाले पर भी गुस्सा न करे लेकिन उस पर प्रेम भाव रखे। उसका भला चाहे और करे लेकिन प्रेम करते हुए भी वह अन्याय करने वाले के वश में न हो। उसके अन्याय का विरोध करे और ऐसा करते हुए जो कष्ट वह दे, उसे धीरज के साथ और अन्याय करने वाले से द्वेष किये बगैर सहन करे।

–महात्मा गाँधी

('मंगल–प्रभात' से)

युगपुरुष बाबा अवतार सिंह जी की व्यवहारिक अहिंसा

■ पूर्ण प्रकाश 'साक़ी'

जुलाई 1949 की बात है। महीने के अन्तिम दिन थे। उस दिन गर्मी भी इतनी थी कि पूछिए मत।

जिन्होंने दिल्ली का यह महीना देखा हुआ है, वे स्वयं ही इन दिनों की गर्मी की तीव्रता का कुछ अन्दाजा लगा सकते हैं।

पहाड़गंज के कुछ मजहबी दीवानों ने बीस–पच्चीस उग्र नौजवानों को साथ लिया और युगपुरुष बाबा अवतार सिंह जी के मकान के नीचे पहुँचकर तीखी नारेबाजी और प्रदर्शन करने लगे।

उस समय संयोगवश मैं भी बाबा अवतार सिंह जी के निवास स्थान पर उपस्थित था। वहाँ आठ–दस दूसरे सत्संगी सज्जन भी मौजूद थे।

उग्र नारेबाजी व शोर सुनकर मैं नीचे जाने को तैयार हो गया ताकि उन लोगों से दो–दो हाथ कर सकूँ।

मुझे ऐसा करते देख बाबा जी ने तुरन्त मुझे रोका और अपने ही पास बैठा लिया। वे हँसते हुए कहने लगे, "सन्तों को क्रोध नहीं, तरस ही खाना उचित है। बेचारे इतनी गर्मी में न जाने कहाँ से चलकर आये हैं। हमारा तो यहाँ घर में बैठे–बैठे ही गला सूख रहा है। जोर–जोर से चिल्लाने वालों का तो और भी बुरा हाल हो रहा होगा।"



यह बात कहते ही बाबा जी ने दो महापुरुषों से कहा कि बर्फ से ठंडा किया हुआ पानी नीचे ले जाएं और आने वालों की जल पिलाकर सेवा करें।

मैं चुपचाप यह सब कुछ देखता रहा। ठंडे जल की बाल्टी लेकर दो सज्जन नीचे चले गये। बहुत प्यार से ठंडे पानी के गिलास भर–भरकर उन्होंने सबके आगे कर दिये।

उन्हीं में से एक व्यक्ति ने जल पीते हुए प्रश्न किया कि यह जल किसने भेजा है? जल ले जाने वाले सज्जन ने उत्तर दिया कि उसी ने, जिसको आप गालियाँ दे रहे हो।

यह उत्तर सुनकर आने वाले सज्जन, शर्मिन्दा होकर लौट गये। ●

मानव का दर्द



मुझे काली, पीली या नीली झण्डियों से कभी दुख नहीं हुआ, पर जब किसी भी मनुष्य का खून बहता है तो मैं बहुत दुखी होता हूँ। चाहे वह मनुष्य हमारा साथी हो या विरोधी मनुष्य का खून किसी भी हालत में नहीं बहना चाहिए। अगर किसी के विचार नहीं मिलते तो शान्तिपूर्वक बैठकर उस पर विचार करना चाहिए। सन्तों का मार्ग हमेशा अहिंसा का मार्ग रहा है

- युगप्रवर्तक बाबा गुरबचन सिंह जी

हमारे सन्त-महापुरुष

ममता-सेवा की सजीव मूर्ति - जगतमाता बुद्धवंती जी

• राज वासदेव सिंह

दूर से अपनी ओर आकर्षित कर रहे सुन्दर महल की नींव के पत्थर भले ही दिखाई न देते हों, परन्तु इस सच्चाई को झुठलाया नहीं जा सकता कि इन्हीं अदृश्य नींव के पत्थरों पर ही वह आकर्षक महल टिका होता है। इन पत्थरों का तप-त्याग ही महल के सौन्दर्य का कारण होता है। ठीक इसी प्रकार आज का विश्वव्यापी सन्त निरंकारी मिशन सदैव ऋणी रहेगा उन महान विभूतियों का, जिन्होंने अपना सर्वस्व इस मिशन की मजबूत बुनियाद बनाने में कुर्बान कर दिया। इन्हीं ऐतिहासिक महानुभावों में से एक थीं - ममतामयी जगतमाता बुद्धवंती जी।

वैसे तो इतिहास ऐसी नारियों के चरित्रों से भरा पड़ा है, जिन्होंने किसी सीमित क्षेत्र में अपनी महानता का प्रदर्शन किया, जो दूसरों के लिए प्रेरणा की स्रोत बनीं परन्तु जगतमाता जी तो वह महान विभूति थीं, जिन्हें अपने जीवनकाल में ही 'जगतमाता' की सम्मानित उपाधि प्राप्त हुई, क्योंकि उन्होंने अपनी ममता के दामन में उन सभी बच्चों को संभाला जिन्हें संभालने वाला कोई और न था। इस माँ को सद्‌गुरु बाबा बूटा सिंह जी की अनन्य भक्त, युगपुरुष बाबा अवतार सिंह जी की जीवन साथी, युगप्रवर्तक बाबा गुरबचन सिंह जी की माँ और युगदृष्टा बाबा हरदेव सिंह जी की दादी होने का सौभाग्य प्राप्त था।



इस ममतामय व्यक्तित्व की शुरुआत होती है आज से एक सौ चार वर्ष पहले।

15 अगस्त 1904 को अविभाजित भारत (अब पाकिस्तान) के गाँव नीला, तहसील चकवाल, जिला जेहलम में श्री लछमन दास के घर एक चाँद सी सुन्दर, बालिका ने जन्म लिया। जिसका गोरा रंग, कोमल त्वचा मानो हाथ लगाए मैली होती थी। इस कोमल कली को चारों ओर से लाड-प्यार मिलने लगा। लछमन दास जी के घर उस से 3 वर्ष पहले 15 जून 1901 को बूटा सिंह नामक फूल खिला था। ये दोनों बहन-भाई इस परिवार की केवल सन्तानें ही न थे बल्कि शान थे। माता-पिता के सरल व सुन्दर स्वभाव का सीधा प्रभाव इन बच्चों पर दिखाई देने लगा। घर में खुशहाली का वातावरण था। यह सुखी परिवार पूरे गाँव में सराहना पाता था।

प्रभु की लीला भी अजीब है। सोने को किसी गृहिणी के गले का श्रृंगार बनने से पहले भट्टी की अग्नि में तपना पड़ता है शायद इसीलिए केवल चार वर्ष की आयु में ही बुद्धवंती जी के सिर से पिता का साया उठ गया। आपकी माता ने अपने दोनों बच्चों के पालन-पोषण में कोई कमी न छोड़ी। उन्होंने अपनी लाडली के लिए अपनी हवेली में ही स्कूल खुलवा दिया और बाद में यह हवेली स्कूल को ही दान दे दी।

ऐसी परोपकारी माँ की गोद में रहने का, आपको केवल सात वर्ष की आयु तक ही सौभाग्य प्राप्त हुआ। माता के परलोक सिधारने के पश्चात आपके भाई और आपको, आपकी बुआ लक्ष्मी अपने साथ गाँव सैयद-कसराल ले गई और बड़े प्यार से आपका पालन-पोषण करने लगी।

1918 में बुद्धवंती जी की शादी श्री मुखा सिंह जी और नारायण देवी के सुपुत्र अवतार सिंह जी से हो गई। अपने भोलेपन, सेवा भाव व मधुर स्वभाव के कारण बुद्धवंती जी को परिवार में सभी ओर से प्रेम व सत्कार मिलता रहा। आप हर किसी की जरूरत को पूरा करके खुशी का अनुभव करती थीं। आपका भोलापन, तन-मन की सुन्दरता व कोमलता हर किसी पर चुम्बकीय प्रभाव डालती। इस प्रकार आप सभी से प्रेम पाने लगीं।

1929 में सद्‌गुरु बाबा बूटा सिंह जी ने इस निराकार-परमात्मा का ज्ञान बाँटना आरम्भ किया। इसी वर्ष अवतार सिंह जी ने स्वयं ज्ञान लिया एवं अपने परिजनों व निकटतम सम्बन्धी बूटा सिंह जी (जगतमाता जी के भाई) के परिजनों को सद्‌गुरु के चरणों से ब्रह्मज्ञान की दात दिलवाई।



ब्रह्मज्ञान की दात ने बुद्धवंती जी के जीवन को 'सोने पर सुहागे' की भाँति निखारा। ज्ञान लेते ही आपके घर सद्गुरु एवं महापुरुषों की सेवा आरम्भ हो गई। पेशावर में आपके घर ही सत्संग होता। ब्रह्मज्ञान प्राप्ति के कुछ समय पश्चात ही परिस्थितियाँ बदलीं। सन्त अवतार सिंह जी की प्रार्थना पर सद्गुरु बाबा बूटा सिंह जी आपके ही घर में रहने लगे। इसके पश्चात तो बाबा बूटा सिंह जी, उनकी धर्मपत्नी गुणवंती जी आपके घर के श्रृंगार बने रहे और जब तक इस शरीर में रहे, आपने गुरु एवं गुरु के परिवार को अपनी पलकों पर बिठाए रखा।

मिशन के प्रारम्भिक दिनों में न कोई सेवादल था, न ही कोई सत्संग भवन और न ही आधुनिक सुविधाएं। क्या पेशावर, क्या रावलपिण्डी (पाकिस्तान) और क्या देश के बँटवारे के पश्चात दिल्ली, आपका घर सदैव सन्तों-महात्माओं का मन्दिर बना रहा। गर्मी के दिनों में भी कोयले की अंगीठी या चुल्हे पर सभी सन्तों-महापुरुषों के लिए लंगर पकाना, सेवादारों के कपड़े धोने और उनकी प्रत्येक सुविधा पर विशेष ध्यान देना आपकी दिनचर्या में शामिल था।

ममतामयी जगतमाता जी सेवादारों की सेवा अपने बच्चों से भी बढ़कर करतीं। यदि कोई महापुरुष कोई मिठाई या फल प्रसाद रूप में लाता तो आप उसे सेवादारों के लिए रख लेतीं। कई बार आपके अपने छोटे बच्चे (बहन चरनजीत जी, जालन्धर वाले) किसी चीज़ के लिए आग्रह करते तो आपका एक ही जवाब होता, ''आपको तो और भी बहुत पदार्थ मिल जाते हैं परन्तु प्रसाद या फल तो मैंने सेवादारों के लिए रखा है। सभी सेवादार भी आपको माँ ही समझते और पूर्णतः प्रेम व सत्कार देते।'' सेवा आपका स्वभाव था। ब्रह्मज्ञान लेने से पहले भी पेशावर में बेकरी की दुकान पर कार्य करने वाले नौकरों के चिकने-मैले कपड़े आप अपने हाथों से धोतीं, उनको बच्चों जैसा प्यार देतीं, उनकी शादी स्वयं करवातीं और उनके परिवारों की भी संभाल करतीं।

जगतमाता जी के कोमल हृदय में एक कवयित्री भी बसती थीं। जब बाबा अवतार सिंह जी कल्याण यात्रा पर जाते तो आप अपने हृदय के उद्गार कविता में लिखकर पत्र के द्वारा भेजतीं। आप गुरु को प्रकट करते हुए लिखती हैं :-

रोम-रोम से हर दम निकले, सतगुरु अवतार है।
इसके रहम-करम से देखा हमने यह निरंकार है।

आपकी काव्य प्रतिभा की झलक ही आपके बच्चों में भी देखने को मिली। बहन नन्द जी (कनाडा), सज्जन सिंह जी (सन्त निरंकारी प्रकाशनों के प्रारम्भकर्ता) तथा आपके द्वारा जन्म देने के बाद, बाबा बूटा सिंह जी की कृपा से महात्मा मान सिंह जी द्वारा पालित-पोषित जोगिन्दर सिंह जी 'नूर' (निरंकारी) में आपकी काव्य प्रतिभा का अंश देखने को मिला। आपकी इसी प्रतिभा को निरंकारी राजमाता जी ने और आगे बढ़ाया और कई कविताएं एवं गीत उनकी कलम से लिखे गए।

सेवा व प्रेम की सजीव मूर्ति जगतमाता जी 15 अगस्त 1964 को अपने निज स्वरूप निरंकार में लीन हो गईं। इस दिन भी सेवादल की रैली थी। देश भर में स्वतन्त्रता दिवस मनाया जा रहा था। आपके पास दो सेवादार बहनें थीं। एक को पानी लेने के बहाने और दूसरी को कपड़े सुखाने के लिए बाहर भेज दिया। जब दोनों बहनें बाहर चली गईं तो आपने अपनी आत्मा को भी शरीर से स्वतन्त्र कर लिया। ज्योति से ज्योति मिल गई। प्रकृति का यह खेल भी कितना अद्भुत है। आपके बड़े भाई सरदार बूटा सिंह जी (लेखिका के पिता जी) आपसे तीन वर्ष बड़े थे। उनका जन्म 15 जून 1901 और ब्रह्मलीन होने का दिन 15 जून 1961 और आपका जन्म 15 अगस्त 1904 और ब्रह्मलीन होने की तिथि 15 अगस्त 1964। दोनों बहन-भाई पूरे 60 वर्ष की आयु तक ही शरीरों में रहे।

निःसन्देह आज निरंकारी मिशन विश्वव्यापी स्वरूप ले चुका है। इस व्यापकता में जगतमाता जी का योगदान सदैव सराहनीय रहेगा। वे नारी जगत के लिए भी प्रेरणा की स्त्रोत थीं। जैसे कि कहा जाता है कि हर बड़े पुरुष के पीछे किसी नारी का तप-त्याग छिपा होता है। यह बात जगतमाता जी के साथ शत-प्रतिशत सत्य प्रमाणित होती है। मिशन को फैलाने के लिए युगपुरुष बाबा अवतार सिंह जी दिन-रात कल्याणकारी कार्यों और यात्राओं में व्यस्त रहते और आप पीछे परिवार एवं संगत के बच्चों को पूरी तरह संभालतीं। आप उन्हें अपने ममता के आँचल में दुनिया की आँधियों से बचाए रखती थीं। कोटि-कोटि प्रणाम, जगत माँ को, जो सभी की अपनी थीं। ■



मनुष्य और पशु

• किशन चन्द गुप्ता (मोदीनगर, उ.प्र.)

चाहे वह मनुष्य है, पशु है, पक्षी है अथवा वनस्पति है, सभी का रचनाकार प्रभु ही है। सबके जीवन जीने का ढंग भी प्रभु ने ही बनाया है। पशु भी मनुष्य की भाँति लगभग सभी प्रकार के क्रियाकलाप करते हैं। पशु को कुछ भी सिखाना नहीं पड़ता फिर भी वे अपना काम स्वयं करते हैं। मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है, जो जन्म से लेकर मरण तक कुछ–न–कुछ सीखता ही रहता है फिर भी वह अपूर्ण ही रहता है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज में रह रहा है। समाज मनुष्य से बना है। मनुष्य को बनाने वाली एक ही सत्ता है – ईश्वर। ईश्वर ने मनुष्य के अन्दर दिव्यज्योति प्रदान करने वाली आत्मा स्थित करके उसे सोचने–समझने, कार्य–व्यवहार करने, निर्णय लेने की स्वतन्त्रता प्रदान की है। वह अपने अनुसार अपना जीवनयापन कर सकता है लेकिन पशु ऐसा नहीं कर सकते। पशु पराधीन हैं। मनुष्य और पशु की बनावट में कुछ समानता होते हुए भी, अन्तर स्पष्ट है। मूल अन्तर है – बुद्धि और विवेक का।

मानव का विद्वान, धनवान, बलवान होना तो प्रभु की देन है जिससे वह संसार में रहकर, अपनी क्षमता का सदुपयोग करके जन–मानस के लिए कल्याणकारी बने परन्तु उसका अहम् करना, क्षमताओं का दुरूपयोग करना, मानवता से गिरने से कम नहीं। महर्षि मनु कहते हैं – शरीर जल से, मन सत्य से, बुद्धि ज्ञान से तथा आत्मा, धर्म से पवित्र होती है।

आज संसार में चारों ओर आतंकवाद का साया मंडरा रहा है। घोर कलियुग में धरती दुर्भावनाओं की भीषण अग्नि से धू–धू करती धधक रही है। हिंसा की दावानल ने अखिल विश्व को घेरा हुआ है। इन्सान एक–दूसरे को मारने की योजनाएं बनाने में लगा है। दुर्भावों के कारण मानव की मानवता लुप्त होती जा रही है। मानव, मानव न रहकर पशु से भी ज्यादा गिर चुका है। आज दिखाई दे रहे जगह–जगह बमों के धमाके, भयानक दुर्घटनाएँ आदि मानव के विनाश की सूचक हैं। प्रेम भावना, नम्रता, प्यार तो उसे छू तक नहीं पा रहे हैं। तभी तो कहा है –

जिसका ईमान नहीं, वह इन्सान नहीं,
ईमान न बेचो, भले ही सब कुछ बेच दो।

पृथ्वी, मनुष्य और अन्य सभी प्राणियों से



भरती जा रही है जबकि मनुष्य परमेश्वर से दूर होता जा रहा है। मनुष्य का मन ईर्ष्या, निन्दा, घृणा, कुविचार, क्रोध, लालच, झूठ और घमण्ड से भर गया है, जिसके कारण मनुष्य के नित्यप्रति जीवन में चोरी, व्यभिचार, धोखेबाजी, अत्याचार, लड़ाई–झगड़े और हत्या जैसे बुरे काम किसी न किसी रूप में

शामिल हो गये हैं। इतना ही नहीं, मनुष्य सत्य मार्ग से भटककर निराकार प्रभु से दूर भागता चला गया, जब कि जीवन में भक्ति का आरम्भ निराकार प्रभु–परमात्मा की स्तुति से ही हुआ था लेकिन ध्यान न टिकने के कारण बाद में उसने अपनी इच्छानुसार स्वयं की कलाकारी द्वारा सुन्दर से सुन्दर भिन्न–भिन्न देवी–देवताओं की मूर्तियाँ बनाकर उनकी पूजा शुरु कर दी। साथ ही वह प्रभु की बनायी मूर्तियों से घृणा भी करने लगा। इस कारण मनुष्य परमेश्वर से दूर होता चला गया।

आज पशु भी इतना समझदार है कि वह अकारण किसी पर वार नहीं करता। उसकी हिंसा भी उसकी उदरपूर्ति करने तक ही सीमित है। जबकि आदमी आदमी का कातिल बना है जिससे उसे कोई लाभ प्राप्त होने वाला नहीं है। यदि मानव मन को अपने वश में करले तो मानव, सन्त और अन्ततः देवता बन सकता है वरना तो वह दानव ही कहलायेगा। अच्छे विचार, अच्छे कर्म–व्यवहा ही मानव को मानव बनाते हैं। ऐसे कर्मों के परिणामस्वरूप ही मनुष्य के लिए स्वर्ग–नव बन जाते हैं। युगपुरुष बाबा अवतार सिंह जी सम्पूर्ण अवतार वाणी के पद संख्या 239 में कहते हैं –

पशुओं के और नर के भीतर अन्तर केवल ज्ञान का है
कहे अवतार प्रभु को जाने काम यह बुद्धिमान का है

वास्तव में मनुष्य ही एक मात्र ऐसा प्राणी है जिसे समझाया जाता है। पशु को पशु बनने को किसी ने नहीं कहा, परन्तु मनुष्य को (शरीर से) मनुष्य होते हुए भी मनुष्य बनने की चेतावनी दी जाती है। कहा भी है – "मनुर्भव"। हर युग में गुरु–पीर–पैग़म्बरों ने अपने प्रवचनों द्वारा मनुष्य को जाग्रत किया है। इस युग में भी निरंकारी बाबा हरदेव सिंह जी महाराज देश–विदेश जाकर मानव को मानवता का भाव समझा कर रहे रहें है कि – हे मानव, तू चौरासी लाख योनियाँ भोगकर आया है तब तुझे मानव योनि मिली है। अब तू अच्छे कर्म कर, जिससे तेरी मुक्ति हो जाये अर्थात् तू आवागमन के चक्कर से बच जाये। अब तू इस रूप को पहचान, जिसे प्रभु ने मानव में एक ज्योति के रूप में प्रतिस्थापित किया है। जिन्होंने निराकार प्रभु को जान लिया है, वे अपने सद्गुरु के प्रति श्रद्धा और प्यार की भावना से नतमस्तक रहते हैं। इस निराकार प्रभु का एहसास करके वास्तव में दास को इतना सुकून व चैन मिला जिसका कोई मुकाबला नहीं। अतः यही महसूस होता है कि यदि मानव प्रभु परमात्मा की अनुभूति कर लेता है तो ही वह सही अर्थों में पशु से श्रेष्ठ सिद्ध हो पाता है। ■



श्री गुरुवचनामृत



31 अगस्त 2008 (रविवार) को बुराड़ी रोड, दिल्ली स्थित ग्राउण्ड नं. 8 में आयोजित विशाल सत्संग समारोह को सम्बोधित करते हुए सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी महाराज ने फरमाया-

साध संगत जी, प्रेम से कहना, धन निरंकार!

साध संगत! अभी आप ऐसे वचनों का आनन्द ले रहे थे जिन्हें श्रवण करने की इच्छा हमेशा भक्त के हृदय में रहती है। भक्त चाहता ही यही है कि सुनने को भी मिले तो दातार तेरा ही यशोगान सुनने को मिले। ऐसे सांत्वना, धीरज देने वाले, सुकून देने वाले, भक्ति को और सुदृढ़ करने वाले वचन ही हमेशा श्रवण करने को मिलें। भक्त की चाहना हमेशा यही रहती है, इसलिए इन वचनों की, गीत, कविता, व्याख्यान आदि जिस रूप में भी प्रस्तुति होती है, उस का आनन्द लिया जाता है।

आज भी सत्संग में हमेशा की तरह ऐसे ही अमोलक वचन श्रवण करने को मिले हैं। चाहे वो किसी नौजवान की रसना से या फिर किसी बुजुर्ग की रसना से श्रवण करने को मिले। दिल्ली से या हिन्दुस्तान के किसी और कोने से चलकर आये महापुरुषों की रसना से या फिर हिन्दुस्तान से बाहर अमेरिका जैसे मुल्कों से जो महापुरुष चलकर आये, उनके भाव भी आपने सुने। सबमें समानता देखी आपने कि जिन पहलुओं को हिन्दुस्तान में भक्तजन अहमियत दे रहे हैं, बाहर के मुल्कों में भी भक्त इन्हीं पहलुओं को अहमियत देते हैं। यहाँ भी साध संगत को ही विशेषता दी जाती है वहाँ भी साध संगत को विशेषता दी जाती है। यहाँ गुरमुखों का आदर–सत्कार किया जाता है वहाँ भी यह मांग मांगी जाती है कि दातार हम

बच्चे–बच्चे का सत्कार कर सकें। यहाँ भी भक्त कहते हैं कि माया का प्रभाव न हो, वहाँ रहने वाले भी कहते हैं कि हम माया में गलतान न हो जाएं। इसका असर हमारे मनों के ऊपर न हो। हमारे मनों पर असर रहे तो ज्ञान का ही रहे। गुरु के शब्दों का असर रहे, गुरमत का असर रहे। संसार के असर बहुत प्रभावी हैं ये अपना प्रभाव डालते ही डालते हैं। एक उस प्रभाव में आकर उसी ओर बह जाता है लेकिन एक उस प्रभाव में अपने पाँव चट्टान की तरह जमाए रखता है। एक नदी में पड़े हुए उस विशाल चट्टान की तरह जो जितना मर्जी पानी का बहाव हो लेकिन वो अपनी जगह अड़ा रहता है। इसी प्रकार भक्त भी अपने अकीदे को मजबूत रखता है कि संसार के जितने मर्जी प्रभाव हों लेकिन वह उस बहाव में नहीं बह जाता, वो इस निराकार पर अपनी निष्ठा और अकीदा कायम रखता है। वो विष की तरफ नहीं बढ़ता, अमृतपान करता रहता है। भक्तों की मांग, भक्तों के मक़सद एक ही तरह के होते हैं चाहे वो धरती के किसी भी हिस्से में रहने वाले क्यों न हों।

भक्तों का भाव सत्य और भक्ति के ही ऊपर आधारित रहता है चाहे वो महल में रहें या झोंपड़ी में। जिस निराकार पर अकीदा रखने के लिए महापुरुष प्रेरणा दे रहे हैं तो इनके ज़हन में हमेशा यह बात रहती है कि इस निराकार का बोध जो हुआ तो इसके लिए साधन कौन सा बना? वो साधन गुरु का रूप होता है, ब्रह्मज्ञानी का रूप होता है। सद्गुरु की कृपा से हमें यह दात मिली, यह निशाना मिला। पहले अनुमानों से युक्त होकर हम जीवन जी रहे थे, इसकी उपस्थिति किसी विशेष स्थान पर ही मानते थे, लेकिन गुरु की ही कृपा हुई कि यह नाता हमारा जुड़ा। इस अलख परम सत्ता की लखता करा दी गई फिर



गुरु के प्रति समर्पण और कृतज्ञता का भाव प्रकट हुआ। इसी भाव की प्रबलता के कारण ही एक गुरसिख गुरू को जीवन में उस प्रकार का स्थान देता है, जिस प्रकार बाबा अवतार सिंह जी ने अपने सद्गुरु बाबा बूटा सिंह जी की कृपा से यह दात प्राप्त की और जिस तरह की लगन उन्हें अपने सद्गुरु बाबा बूटा सिंह जी के प्रति रही। उसी भाव की अभिव्यक्ति ये कर रहे हैं कि गुरसिख किस प्रकार गुरु को समर्पित रहता है। जिसने गुरु से समझ प्राप्त की, उसके हृदय में प्यार रच जाता है। क्यों कि गुरु ने प्रेम के स्रोत के साथ नाता जोड़ा है इसलिए हृदय में यह प्रेम ही रच जाए और इस जुबान पर इसी की महिमा, इसी के गुणगान रहें। भक्त यही मांगता है कि दातार कृपा कर, इस मन में हमेशा तेरा ही वास हो। जो हमें यह



बोध कराया है इसका अहसास कदम–कदम पर तथा स्वांस–स्वांस पर रहे। इस मन में कभी भी सांसारिक प्रवृतियों को न बसायें, नफ़रत के भाव पैदा न हों इसलिए प्यार ही दिल में बसा रहे। किसी विपरीत भाव को हम मन में बसायें नहीं।

संसार बहुत प्रभावी है, यह नाना प्रकार के प्रभाव डालता है। वो प्रभाव होते हैं परिस्थितियों के, दुनियावी सामान के, प्रलोभनों–तृष्णाओं के, कहीं पर वैर, ईर्ष्या के भाव जाग जाते हैं या छल–कपट के भाव जाग जाते हैं। ये प्रभाव जहर के, विनाश के रूप होते हैं। ये सब गिरावट के कारण बनते हैं, पतन की ओर ले जाते हैं इसलिए महापुरुष–सन्तजन यही प्रार्थना करते हैं कि दातार इस मन में तुम बसे रहो ताकि इसमें पावनता छाई रहे, हमेशा प्रेम बसा रहे। दिल में कदूरत न हो, नफ़रत न हो, वैर–ईर्ष्या तथा जलन के भाव न हों।

जब प्रेम हृदय में रच जाता है तो हम प्रेम भरा व्यवहार करते हैं। प्यार की देन हम औरों को भी देते चले जाते हैं, साथ ही प्यार के भागीदार भी बनते चले जाते हैं। महापुरुषों का पैगाम भी यही रहा है कि हम प्यार की गंगा बहाते चले जाएं, सभी को शीतल करते चले जाएं और प्यार की धारा आठों पहर बहाते चले जाएं। अगर आठों पहर इस मन में मालिक का वास रहे तो आठों पहर इस मन में प्रेम का भी वास रहेगा –

प्रेम प्रेम सब कोई कहे प्रेम न जाने कोय,
आठ पहर बहता रहे प्रेम कहाय सोय।

यह प्यार की धारा बहती ही चली जाए इससे मन खाली न रहे। अगर इससे मन खाली रहेगा तो यह मन मन्दिर भी नहीं रहेगा। कुछ और ही रूप इसका बन जायेगा। इस प्रकार इस मन को मन्दिर बनाने के लिए इसमें मालिक का वास जरूरी है, प्रेम का वास जरूरी है। भक्त सदा ये ही मांग मांगता है कि दातार तू हमेशा इस मन में बसा रहे ताकि मन प्यार से भरा रहे। मन में प्यार भरा रहेगा तो व्यवहार भी प्यार वाला होगा, देन भी प्यार वाली होगी इसलिए मालिक का वास दिल में है और जिक्र जुबान पर।

गुरसिख गुरु की आँखों से देखता है और गुरु के कानों द्वारा सुनता है। गुरु के कानों से सुनने का मतलब कि गुरु किस भाव से सुनता है और किस तरह से देखता है। गुरु ऐसे भाव से देखता है, जिसको हम समदृष्टि कहते हैं, कोई पक्षपात नहीं। गुरु की दृष्टि ज्ञान वाली होती है, समदृष्टि होती है। जिस भाव से गुरु

सुनता है गुरसिख भी अगर उसी भाव से सुने। ऐसा पैमाना बनाकर न सुने या ऐसी *Prejudice* (पूर्वाग्रह) मन में रखकर न सुने या फिर कोई अक्ल–स्याणपों को सामने रखकर न सुने। भावों को विशेषता दे क्यों कि जब गुरु सुनता है तो वह इस प्रकार नहीं सुनता कि कितनी अक्ल इस्तेमाल करके, कहने वाला कह रहा है। गुरु भाव को समक्ष रखकर सुनता है। यदि गुरसिख भावों को ज्यादा विशेषता देता तो फिर उसकी मन रूपी धरती में वो बोल, वो शब्द रच जाते हैं फिर वाकई वो उससे लाभान्वित होता है। सन्त–महापुरुष यह प्रार्थना हमेशा से इस निराकार से करते आए हैं कि दातार ऐसी कृपा करो कि हम हमेशा वही कर्म करें, उसी भावना से युक्त हों ताकि गुरु की दृष्टि हमारी दृष्टि बन जाए। गुरु ने ज्ञान दिया वही जो गुरु के पास था तो फिर यह दृष्टि भी वही हो जो गुरु के पास है। जो दात गुरु के पास थी गुरु ने उसी दात के भागीदार हमें बनाया। ज्ञान की दृष्टि से ही गुरु देखता है, छोटा या बड़ा करके नहीं देखता है। गुरु हमेशा ज्ञान की दृष्टि से देखता है जिससे कि घट–घट में इस मालिक का वास नज़र आता है कोई बड़ा या छोटा नहीं। गुरु–सत्कार भी सबका इसी तरह से करता है। वह छोटा या बड़ा करके नहीं देखता कि वह अमीर है या गरीब है? कुटिया में रहता है या महल में रहता है? गुरु का यह भाव हरगिज़ नहीं होता। वो सभी को समान दृष्टि से देखता है और सबके आदर–सत्कार के भाव मन में रखता है। अगर गुरसिख भी इसी भाव से युक्त हो जाए तो वाकई उस गुरसिख का रुतबा भी गुरु वाला हो जाता है। उसका रुतबा भी बहुत ऊँचा हो जाता है। लेकिन उस रुतबे तक गुरसिख इसलिए नहीं पहुँच पाता क्यों कि न वो गुरु की दृष्टि से देखता है न गुरु के कानों से सुनता है इसलिए उसको वो रूप नहीं मिल पाता है, वह उस अवस्था तक नहीं पहुँच पाता है।

बाबा अवतार सिंह जी के वचन जो हम निरन्तर पढ़ते–सुनते हैं उनके पीछे भी भाव यही है कि जो दृष्टि गुरु ने दी थी उस दृष्टि से देख रहे हैं, जो चश्मा दिया गुरु ने वो पहनकर देख रहे हैं। यह नहीं कि गुरु ने जो चश्मा दिया उसको एक तरफ रख देंगे और कोई और चश्मा चढ़ा लेंगे। गुरमत वाला चश्मा एक तरफ रख देंगे मनमत वाला चश्मा चढ़ा लेंगे तो इस तरह से नहीं।

बाबा अवतार सिंह जी ने वही चश्मा पहना जो गुरु ने पहनाया। जो नज़र गुरु ने दी उसी नज़र से देखते चले गए। कानों से भी उन्होंने वही सुना जो सुनने के लिए गुरु ने कान प्रदान किए। यानी जो गुरु वाली भावना है वो



गुरसिख ने अपना ली इसीलिए आज उनको ऐसे ऊँचे दर्जे से देखा जाता है। जब इस प्रकार की अवस्था बन जाती है तो वह हीरे–मोती चुनता है। वो कंकड़ों का ग्राहक नहीं बनता, वो हीरे–मोती ही चुनता है। इस संसार में विचरण करता है तो वह संसार का असर ग्रहण नहीं करता। संसार की प्रवृतियों को वह अपनाता नहीं है। वह हीरे–मोती चुनने वाला बन जाता है उसी हंस की तरह जिसकी दृष्टि होती है मोतियों की तरफ न कि उस बगुले की तरह जो मांस ही प्राप्त करना चाहता है। इसी तरह गुरसिख के बारे में कहा गया है कि वह ज्ञान रूपी सरोवर से हीरे–मोती चुनता है। क्यों कि वो इसके साथ जुड़ा हुआ है, इस सरोवर में डूबा रहता है। हंस वाला दर्जा भी उसी को प्राप्त होता है जो डूबा रहता है। कहते हैं –

बाहरि गिआन धिआन इसनान
अंतरि बिआपै लोभु सुआनु

अगर अन्तर में वो भावना नहीं हैं तो वह गहरे में नहीं उतरता इसलिए ज्ञान रूपी सरोवर में से हीरे–मोती वही भक्त चुन सकता है जो वाकई इस रंग में रंगा रहता है। जिसकी भावना गुरु वाली है, जिसकी दृष्टि गुरु वाली है। यह वास्तविकता बताई गई है वरना सत्कार देने को भक्त दे भी देते हैं लेकिन गुरु ने कृपा की कि जिस स्थान पर गुरु बैठता है उसी स्थान पर गुरसिखों को भी बैठाता है। जिस प्रकार नतमस्तक गुरु के सामने होते हैं उसी प्रकार से गुरसिखों के आगे भी होते हैं लेकिन अगर कोई यह ही समझ ले कि हमें यहाँ पर ऊँचे स्थान पर बिठाया जाता है तो शायद हम बहुत ऊँचे हो गए हैं तो ऐसी बात नहीं है। यह तो निरोल गुरु की कृपा होती है और आगे गुरसिखों की महत्ता है कि वो भी उसी दृष्टि से देख रहे हैं जिस दृष्टि से गुरु को देख रहे होते हैं। गुरु ने इशारा कर दिया कि इस स्थान पर जो बैठता है उसको वही सत्कार प्राप्त होता है जो गुरु को प्राप्त होता है। गुरसिख वही सत्कार उसे दिये चले जाते हैं। लेकिन जिसको ऐसे अवसर मिलते हैं उसके मन में, ज़हन में यह बात हमेशा बनी रहे कि मैं तो चरणों का दास हूँ। मैं कोई विशेष या श्रेष्ठ नहीं हूँ। मेरे में कोई ऐसा गुण नहीं है। ऐसा मैंने कुछ किया भी नहीं है कि जिसके कारण मुझे ऐसे ऊँचे स्थान पर बैठा दिया गया। जिस स्थान पर गुरु बैठता है

यदि गुरसिख को ऐसे स्थान पर बैठने को मिलता है जहाँ सब उसके आगे ऐसे नतमस्तक हो रहे हैं जैसे गुरु के आगे होते हैं तो फिर ऐसे ऊँचे स्थान पर बैठकर उस गुरसिख की भावना भी गुरु वाली हो। जैसे गुरु की भावना होती है कि एक–एक गुरसिख मेरे सिर का ताज है।



तो फिर उस स्थान पर बैठा हुआ गुरसिख भी यही माने कि ये सब गुरसिख मेरी सिर–आँखों पर हैं, मेरे सिर के ताज हैं और ये सब मुझसे श्रेष्ठ हैं।

जब आरम्भ में बाबा गुरबचन सिंह जी को यह जिम्मेदारी दी गई तो वो पहले से ही कम बोलते थे। उस समय सत्संग में एक–दो मिनट ही बोलते थे। कई बार तो वो उस समय के बुजुर्गों को ही, विचार के लिए कह देते थे। एक दिन किसी महापुरुष ने उनसे ऐसा जिक्र कर दिया कि विचार करना एक कला होती है कि सैकड़ों–हजारों के सामने कैसे बोला जाए। उनका आत्मविश्वास का स्तर बहुत ऊँचा होता है। वो नुक्ते हम जानते हैं। जो श्रोता हैं उनको आप यही समझो कि इनको कुछ नहीं आता। जो कुछ आता है आपको आता है। जब यह भावना होगी तो आपके आत्मविश्वास का स्तर बहुत ऊँचा होगा। आप धड़ल्ले से अपनी बात कह सकोगे। उत्तर में बाबा गुरबचन सिंह जी ने कहा कि मैं दो मिनट से ज्यादा पाँच मिनट तक भी नहीं पहुँच पाऊँ तब भी मुझे कोई ग़म नहीं। लेकिन आप जो यह बात कह रहे हैं आपके लिए ऐसा हो सकता है कि किसी *Political field* (राजनीतिक क्षेत्र) में हों या आप किसी यूनियन के लीडर हों। आप समझ सकते होंगे औरों को मूर्ख लेकिन मैं जिस स्थान पर बैठा हुआ हूँ यहाँ तो सारे गुरमुख मेरे से कहीं ज्यादा ऊँचे और सूझवान हैं। मैं हरगिज इनको मूर्ख नहीं मान सकता। यह न मेरी सोच है न मेरी भावना है। मैं इसलिए नहीं बोलता हूँ कि कोई कहे कि कितना अच्छा बोल रहा है। मैं एक लाइन बोलूँ वो मुझे मुबारक है। मैं एक लाइन भी बोलूंगा उसमें भी निराकार और भक्ति का जिक्र करूंगा। मैं अच्छा बोल सकूँ और प्रभाव भी अच्छे से अच्छा डाल सकूँ तो ये तो सब दिमागी खेल होते हैं। मेरी दुनिया दिमागी और चतुराईयों वाली नहीं है। मेरी दुनिया दिल वाली है, भाव वाली है।

गुरु की मूरत दिल में बसी रहे और हृदय में उपकार की भावना हो। यदि दिल में गुरु की मूरत बसी हुई है और गुरु की भावना को पकड़ लिया है कि गुरु किस भाव से देखता है, किस प्रकार की भावनाएं गुरु के मन में कार्य करती हैं। यदि गुरु की मूरत ध्यान में है तो गुरु वाला एक और पहलू होता है उपकार का। गुरसिख भी उपकार के रास्ते पर चल पड़ता है। फिर वह अपने जीवन को सुधारने व संवारने के साथ–साथ जन–जन तक यह संदेश पहुँचाता है, औरों के काम आता है। गुरु को गुरु इसलिए माना क्यों कि गुरु ने इस सत्य का बोध कराया। गुरु की मूरत ध्यान में आई तो निराकार की मूरत ध्यान में आई, इस निराकार का भी अहसास हो गया। अगर मेरे हिस्से में यह दात आई तो क्यूँ न मैं औरों तक भी इस सच्चाई का संदेश पहुँचाऊँ, इस सत्य के साथ जुड़ने की प्रेरणा दूँ कि हमने तो अपने जीवन काल में इस मंजिल को पा लिया है तो तुम भी इस ओर कदम बढ़ा लो और इस प्रभु को जान लो। हमने अपनी आत्मा का कल्याण किया है





आप भी अपनी आत्मा का कल्याण कर लो इसलिए गुरु की मूरत ज़हन में आती है तो निराकार भी ज़हन में आ जाता है, उपकार भी जाग जाता है और प्यार, नम्रता और सत्कार वाला पहलू भी प्रबल हो जाता है। जरूरी है कि हर परिस्थिति में गुरु के साथ मन की तार जुड़ी रहे। जब इसका अहसास आठों पहर बना रहता है तो ऐसी कोई परिस्थिति नहीं आती कि जिसके कारण गुरसिख गुरु को या निराकार को विसार देता है। वो हर हाल में, हर परिस्थिति में ध्यान रखता है, ऐसा नहीं कि सुख प्राप्त हो रहे हों तभी और यदि कोई दुख की बात हुई है तो किसी और ही तरफ ध्यान चला जाये। बाबा अवतार सिंह जी ने भी कहा है कि –

कहे अवतार हर हाल दे अन्दर करदा रब दा शुकर शुकर।

उसके लिए हर हाल में गुरु ही महत्ता रखता है। कबीर जी की इस अवस्था की तरह कि –

कबीर राम न छोडिए तन धन जाये तो जाये।

मैं राम को, इस निराकार को नहीं छोड़ सकता, इससे विमुख नहीं हो सकता हूँ। दुनिया की दौलतें मेरे हिस्से में आ भी गईं तो भी मैं गुरु की दी हुई दात की कीमत नहीं चुका सकता। ये सब ठीकरे हैं, सब कूड़ हैं –

खोजत खोजत खोजिआ नामै बिनु कुरु।

हर गुरु–पीर–पैग़म्बर ने फैसले दिए हैं और भक्त ने प्रकट किया है अपने अकीदे और विश्वास को कि कैसी भी परिस्थिति आ जाये, भक्त *Positive* (सकारात्मक) रूप में अपने आपको प्रकट करता है, वह मानकर चलता है कि –

मेरा मुझ में कुछ नहीं जो कुछ है सो तेरा,
तेरा तुझको सौंपते क्या लागे है मेरा।

गुरसिख मानता है कि तन–मन–धन इस प्रभु का ही है और –

जिस दी वस्तु ओहदी समझें कम की तकरार दा ए,
कहे अवतार एह पहला प्रण ए तन, मन, धन निरंकार दा ए।

परिस्थितियाँ कैसी भी होती हैं भक्त की दृष्टि ऐसी होती है, जैसे एक पंक्ति किसी ने कही–

क्या पता दुख ही वह द्वार हो,
सुख जिसके पार हो

भक्त ऐसी समझ प्राप्त कर लेता है, *Positive* रहता है कि *Light is the end of tunnel.* (प्रकाश सुरंग का अन्त है) टनल में तो अन्धकार है लेकिन उसके आगे रोशनी नजर आ रही है। जो इस रंग में रंगे होते हैं, ऐसी फ़ितरत से युक्त होते हैं वो जीवन की यात्रा को सहजता के साथ तय करते हैं। उनको ठहराव मिल जाता है, अडोल अवस्था मिल जाती है। फिर वह माया का प्रभाव ग्रहण नहीं करता। वो इस नाम की दौलत को विशेषता देता है, राम रतन को विशेषता देता है। माया केवल हीरे, सोना–चाँदी आदि नहीं है, माया केवल जायदादों का नाम नहीं है, माया कोई इमारतों का नाम नहीं है बल्कि हर वह वस्तु, हर वह कारण जो हमें सत्संग से, निराकार से दूर ले जाये, वह माया हुआ करती

है। ऐसी माया के ऊपर विजय हासिल करना यानि कि इसके प्रभाव ग्रहण न करना, टपला न खाना, डुलायमान न होना। कबीर जी जैसे सन्तों ने भी कहा है कि –

माया तो ठगनी भई ठगत भई संसार।
जिस ठग यह ठगनी ठगी तिस ठग को नमस्कार।

माया तो ठगनी है अपना प्रभाव डालती है लेकिन इस ठगनी को जो ठग ले, वह माया से भी बलवान है। भाव, जो रंगा हुआ है इस रंग में, जो इस अमृत को विशेषता देता है तो वह विष का प्रभाव ग्रहण नहीं करता। वह किसी भ्रम में नहीं आता है। माया के अनेकों रूप बन जाते हैं पर्दा सामने आ जाता है। यह माया का पर्दा हटाया तब यह सत्य प्रकट हुआ, यह निराकार प्रकट हुआ; अब फिर कहीं संसार के प्रभाव आ गये तो फिर माया का पर्दा पड़ गया और फिर किसी भ्रम में आ गये फिर किसी भ्रान्ति में आ गये। इस प्रकार की भ्रान्तियों के कारण किस प्रकार कई अपने आपको सत्संग से दूर कर लेते हैं और गुरसिखों से नाता तोड़ लेते हैं, यह भी माया है। भक्त हमेशा यही प्रार्थना करता है कि –

डोलन ते राखहु प्रभु

कहीं हम बहक न जायें, हमारे कदम कहीं लड़खड़ा न जायें बल्कि इसी प्रकार चलते जायें।

अगर गुरसिख का विश्वास इतना मजबूत है तो वह किसी और को लेखे क्या लगायेगा? वह तो मिटा देता है अपने आपको, समर्पित कर देता है। फिर आँखें हटती नहीं हैं इस प्रभु से। वह मन की आँखों के द्वारा इसके दर्शन करता रहता है। ज्ञान की दृष्टि से दर्शन करता रहता है, दुनिया के चाहे जितने नजारे हों, जितने प्रभाव हों वह उन्हें ग्रहण नहीं करता है। वह ज़हन में बिठाये रखता है इस मालिक को, निराकार को। इसी केन्द्र के ऊपर वह अपने आपको केन्द्रित कर देता है। यह नहीं कि केन्द्र कुछ और है और वह मन को कहीं और केन्द्रित कर देता हो। गुरसिख का मन इस केन्द्र पर केन्द्रित रहता है इसलिए अडोल रहता है। गुरु को ही जीवन में महत्ता देता है; अहमियत देता है, प्यार को अहमियत देता है, नम्रता को, भक्ति को अहमियत देता है। इसके अलावा वह किसी और को अहमियत नहीं देता। वह सदा यही मांग मांगता है कि दातार कृपा कर हम इसी तरह अडोल बने रहें। सहज अवस्था में चलते चले जायें। जैसे जब हवा चलती है तो वह जिस दिशा में चल रही है लेकिन किश्ती जिसके ऊपर कपड़ा बांधा होता है तो उसके पीछे तकनीक यही होती है कि कपड़े को इस कद्र मोड़ते चले जाते हैं कि नाव की *Direction* (दिशा) न बदले। हवा की *Direction* (दिशा) जिस तरह से चल रही है वो कपड़े पर ऐसी पड़े ताकि वह किश्ती हवा के दवाब से बनी *Energy* से आगे बढ़ती रहे। यही भक्ति की अवस्था है कि हम अपने मन की दिशा इस प्रकार की बनाये रखें ताकि हमारी नौका किसी और दिशा की ओर न चली जाये, हम हमेशा सही दिशा की ओर बढ़ते चले जायें।

साध संगत जी, धन निरंकार।

(संग्रहकर्ता : सुलेख 'साथी')



बाल वाटिका

कुछ कर्तव्य और जिम्मेदारियाँ

• प्रस्तुति ❐ प्रियंका केशरी (गड़हनी, बिहार)

जीवन में अन्य जिम्मेदारियों के बावजूद हमारा कर्तव्य अपने माता–पिता के प्रति भी होना चाहिए जिसे कुछ लोग अनावश्यक समझकर मुँह मोड़ लेते हैं।

ऐसे लोग स्वार्थ के कारण लोभ में इतने अन्धे हो जाते हैं कि इतना भी भूल जाते हैं कि हमें जन्म देने वाले हमारे माता–पिता हमारे घर के देवता हैं। एक कहानी याद आती है –

एक घर की छत पर एक कौआ आ बैठा। छोटे बच्चे ने पिता से पूछा, "पापा, यह क्या है?" पिता ने प्यार से बताया – "बेटे, यह कौआ है।"

बच्चा बार–बार पापा से एक ही सवाल पूछता और हर बार पिता बड़े प्यार से समझाते और कहते कि बेटे, यह कौआ है।

समय बीता। जब बेटा बड़ा हुआ और पिता बूढ़े हो गए तो घर में कोई मेहमान आया। पिता ने बेटे से पूछा, "बेटा कौन आया है?" बेटे ने जवाब दिया कि मेहमान आए हैं।

बुढ़ापे के कारण पिता की याददाश्त कुछ कमजोर हो गई थी, इसलिए पिता ने एक–आध बार और पूछ लिया, "बेटा कौन आया है?" बेटे ने बिगड़ते हुए कहा, "आपको तो याद नहीं रहता लेकिन मुझे क्यों परेशान करते रहते हैं। आप चुपचाप मुँह बन्द करके बैठिए ना।"

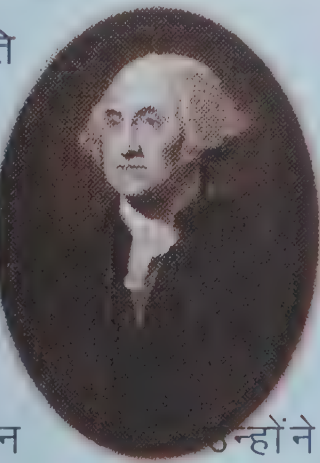
वाह री सन्तान! किसी ने सच ही कहा है कि जिस बेटे को बचपन में माँ–बाप बोलना सिखाते हैं वही बेटा बुढ़ापे में माँ–बाप को मौन रहना सिखाता है।

हे पुत्र, बचपन में तू अपनी माँ का बिस्तर गीला करता था, अब बड़ा होकर उनकी आँखें गीली करता है क्या तुझे अपने माँ–बाप को गीले पर रखने की आदत हो गयी है?कर्तव्यों से मुँह मोड़ने वालों के लिए किसी शायर ने क्या खूब कहा है –

कुत्ते को घुमाना याद रहा, इक गरीब की रोटी भूल गए।
साली का जन्मदिन याद रहा, पर माँ की दवाई भूल गए।

धन्य हैं हमारे बाबा जी जो ऐसे–ऐसे इन्सान बना रहे हैं जिन्हें यह सब सिखलाने की जरूरत नहीं, क्यूँ कि इनके शिष्य सजग, चेतन और कर्तव्यनिष्ठ होते हैं। निरंकारी मिशन ऐसे इन्सान बनाता है जो अपने जीवन के हर पहलू को सन्तुलित रखते हैं। ■

जॉर्ज वाशिंगटन की सरलता



अमेरिका के प्रथम राष्ट्रपति जॉर्ज वॉशिंगटन को सुबह–शाम टहलने की आदत थी। वह तड़क–भड़क और सुरक्षा के तामझाम के बिना ही बाहर निकलते थे। इस कारण बहुत से लोग उन्हें पहचान नहीं पाते थे। एक दिन उन्होंने देखा कि कई मजदूर एक भारी लट्ठे को छत पर चढ़ाने को प्रयास कर रहे हैं। वे बार–बार कोशिश करते थे पर सफल नहीं हो पा रहे थे। ऐसा लगता था कि बस एक आदमी की कमी है। एक और व्यक्ति अगर हाथ लगा देता तो लट्ठा ऊपर चला जाता। वहीं मजदूरों का सुपरवाइजर खड़ा हुआ उन्हें डाँट रहा था, लेकिन वह हाथ नहीं लगा रहा था।

वॉशिंगटन ने उससे कहा, "आप भी हाथ क्यों नहीं लगा देते?" यह सुनते ही सुपरवाइजर ने आवेश में कहा, "मेरा काम है मजदूरों से काम लेना न कि उनका हाथ बँटाना।"

उसके ऐसा कहते ही वॉशिंगटन ने अपने दोनों हाथ लट्ठे में लगा दिए जिससे वह ऊपर चला गया। फिर उन्होंने सुपरवाइजर से कहा, "साहब, फिर कभी जरूरत पड़े तो मुझे बुला लेना। मेरा नाम जॉर्ज वॉशिंगटन है।" यह सुनते ही सुपरवाइजर के होश उड़ गए। वह उनसे क्षमा मांगने लगा। वॉशिंगटन ने उसे इस शर्त पर क्षमा कर दिया कि आवश्यकता पड़ने पर भविष्य में अवश्य वह मजदूरों के काम में हाथ बँटाएगा। ■

आत्ममंथन (सही हल)

1. स	5. द	9. स	13. स
2. अ	6. ब	10. अ	14. अ
3. स	7. स	11. अ	15. ब
4. अ	8. अ	12. स	

सार है क्षमा

• मधु नासा (उदयपुर, राज.)

निश्चय ही क्षमा से मनुष्य और उसकी अच्छाईयों को गरिमा मिलती है। सावधानी से चलने के बावजूद भी कहीं न कहीं गलतियाँ हो जाती हैं। कभी किसी के प्रति मन में दुर्भाव आ जाता है तो कहीं ऐसे शब्द बोल दिये जाते हैं जो किसी के दिल को तोड़ देते हैं।

मनुष्य के जीवन की राह में कई बार ऐसे पल आते रहते हैं परन्तु अगर क्षमा का सहारा मन से लिया जाता है तो रिश्तों की डोर मजबूत होती जाती है अन्यथा टूट जाती है। मनुष्य का बड़प्पन भी इसी में है कि वह अपनी भूलों को स्वीकार करे। जो अपना अपराध स्वीकार नहीं करता है वह अपराध से मुक्त भी नहीं हो सकता।

वैसे भी दुनिया के सारे धर्मग्रन्थों, उपदेशों का यही सार है कि क्षमा को छोड़कर हम कितना भी चलें, कहीं नहीं पहुँचेंगे। सत्य ही यही है कि किसी शिखर पर कोई पहुँचेगा तो वह क्षमा के साथ ही पहुँचेगा।

आईये हम भी निम्नलिखित (अलिखित) खताओं के लिए हर–पल प्रभु से क्षमा मांगें –

- दातार की रहमतों को, दातों को नजरअन्दाज कर (शुकर करने की बजाय) हम नाशुक्रे ही रहे हैं, इसके लिए क्षमा याचना।
- हर बन्दे से प्यार करने के लिए कहा गया लेकिन हम अभी खुद से ही प्यार करने में लगे हुए हैं। इसके लिए क्षमा याचना।
- आदेश था मानव होकर ही रहना है, परन्तु मन में झाँका तो अभी भी चाल पशुओं जैसी ही है। इसके लिए क्षमा याचना।
- कहा गया – सेवा करो, सुमिरण करो और सत्संग करो परन्तु घर–संसार का मोह, जो सत्संग में जाने से रोक रहा है, सेवा से भी जी चुराता है, मन, सुमिरण में भी ध्यान, दुनियावी मोह के कारण कम लगता है। इसके लिए क्षमा याचना।
- कितना भी दिखावटी तौर पर सबके सामने, "गुरू करने वाला है या गुरू ने दिया है" बोल दूँ, पर अन्दर से कर्ता भाव का सूक्ष्म अहंकार जाता ही नहीं। इसके लिए क्षमा याचना।

दातार, ऐसा आशीर्वाद प्रदान करो कि हर सन्त के जीवन में अन्दर–बाहर सम रहने की आदत हो जाये ताकि हमारी करनी और कथनी, खुद के लिए, और संसार के लिए अनुकरणीय बन जाये। •



गीत

सेवा का प्रताप

जो गुरु करे परवान, वो सेवा होती है।
जो करती है कल्याण, वो सेवा होती है।
मान लिया जो हुकम गुरु का आया,
गुरु भक्तों ने है फौरन उसे निभाया।
जो करते रहे हनुमान, वो सेवा होती है.........
दुश्मन में भी रूप प्रभु का पाया,
उन्हें पानी भाई कन्हैया ने पिलाया।
जो देती जीवनदान, वो सेवा होती है............
सेवा, सुमिरण, संगत रहते संग हैं,
प्रेम की भक्ति के तीनों ये अंग हैं।
मिट जाता जब अभिमान, वो सेवा होती है.........
बनता नहीं है काम केवल बातों से,
कर्म भी करने होंगें 'आनन्द' हाथों से।
हो कर्मों के संग ज्ञान, तो सेवा होती है..........

❑**आनन्द प्रकाश** (जम्मू)

निश्चिन्तता की ओर

• मामचन्द सैनी (सभापुर, यमुनानगर)

यह सर्वविदित है कि जीव किसी ना किसी रूप में प्रभु–परमात्मा की शरण लेता रहा है। जीव का, परमात्मा का आसरा लिये बिना कोई अस्तित्व नहीं है। सनातन अंश होने के कारण परमात्मा के अस्तित्व के बिना वह किसी भी कार्य को करने की कल्पना भी नहीं कर सकता। केवल इन्सान को ही यह भ्रम पड़ जाता है कि मैं हूँ। इस अवस्था में वह स्वयं को कर्ता मानकर जीवन जीता है। नित्यप्रति शरीर में परिवर्तन हो रहे हैं लेकिन सृष्टि का चक्र ज्यों का त्यों चल रहा है। इस प्रकार इन्सान कर्ता कहाँ हुआ?

कर्ता तो केवल परमात्मा है, जिसको प्रायः जीव जानना नहीं चाहता। मिथ्या आडम्बरों, बहुदेववाद तथा रुढ़िवादिता के मायाजाल में फँसकर अज्ञानतावश जन्म–मरण के चक्कर में पिसता चला जाता है। इसमें न तो उसका अपना ही कल्याण होता है और न ही समाज का। मनुष्य को यह शरीर प्रभु प्राप्ति के लिए मिला है न कि स्वर्ग की प्राप्ति हेतु। जीव संसार में आकर सभी सुखों को भोगता हुआ परमात्मा की प्राप्ति करे। इस प्रकार उसको



लोक तथा परलोक में भी आदर–सत्कार मिलेगा। यदि जीवन की ऐसी भावनाएं बन जाएं तो वह मोक्ष को प्राप्त कर जाता है। गीता में भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को लोक परलोक का महत्व प्रतिपादित करते हुए कहा है –

पार्थ नैवेह नामुत्र विनाशस्तस्य विद्यते।
न हि कल्याणकृत्कश्चिद्दुर्गतिं तात गच्छति।।

–गीता (6/40)

भगवान श्री कृष्ण कहते हैं कि उस पुरुष का न तो इस लोक में नाश होता है और न ही परलोक में, क्यों कि हे प्यारे! आत्मोद्धार के लिए अर्थात् भगवत्प्राप्ति के लिए कर्म करने वाला कोई भी मनुष्य दुर्गति को प्राप्त नहीं होता।

इस प्रकार जिज्ञासु भाव से जब जीव सद्गुरु के चरणों में समर्पित हो जाता है तो सद्गुरु दयाल हो जाते हैं। अपने गुरसिख पर प्रसन्न हो जाते हैं। समर्पण भाव से जीव प्रभु की शरण हो जाता है तो अपने लिए भक्त का कुछ भी करना शेष नहीं रहता। जैसे एक पतिव्रता स्त्री अपने शरीर को भी अपना नहीं मानती बल्कि उसकी देखभाल, श्रृंगार सब पति के लिए ही करती है। वह घर–परिवार, पुत्र–पुत्री आदि को भी अपना नहीं प्रत्युत पति का ही मानती है। ऐसे ही जीवन जब प्रभु की शरण हो जाता है तो वह निर्भय व निश्चिन्त हो जाता है। जब पत्नी यह मान लेती है कि मैं सिर्फ पति की हूँ तो दोनों में कोई द्वैत का भेद नहीं रहता। 'राम कबीरा एक भयो' की अवस्था में पहुँच जाते हैं फिर वह इधर–उधर नहीं ताकती जैसा कि बाबा फरीद साहेब ने कहा है –

ढूढेदिए सुहाग कू तउ तनि काई कोर।
जिन्हां नाउ सुहागणी तिन्हा झाक न होर।।

आज कलिकाल में भी परमात्मा को पाना सद्गुरु की कृपा से सरल हो गया है। एक बार जैसे ही जीव सद्गुरु की शरण में गया तो समझो उसने परमात्मा को पा लिया। निरिच्छित भाव से केवल भक्ति के लिए अरदास करे, ऐसी वृति यदि भक्त की हो जाए तो वह सद्गुरु की कृपा दृष्टि का पात्र बन जाता है। सद्गुरु बाबा जी संसार को यही अमन का सन्देश दे रहे हैं कि हे इन्सान! सभी भौतिक पदार्थों का त्याग भाव से प्रयोग कर सकने की देर है, प्रभु फिर दूर नहीं। इस अवस्था में गुरु कृपा से प्रभु प्राप्ति

हो जाती है –

पूरे गुर दी शरणी आ जा जे कुझ बणना चाहवें तूं।
कहे अवतार मिले तां पदवी जे अपणा आप मिटावें तूं।।

–सम्पूर्ण अवतार बाणी (शब्द–171)

धर्मग्रन्थों में प्रत्यक्ष प्रमाण दिए गए हैं कि शरणागत जीव परमात्मा के सगुण तथा निर्गुण स्वरूप को जान सकता है। अर्जुन जब कर्मों–धर्मों के भ्रम में पड़ा हुआ था, कुटुम्ब के प्रति मोहग्रस्त हो रहा था कि ये मेरे अपने सगे– सम्बन्धी हैं, इनको मारने से पाप का भागीदार बन जाऊंगा। ऐसी अवस्था में नरक को जाऊंगा तब भगवान श्री कृष्ण ने, जो समय के सद्गुरु भी थे, अर्जुन को केवल यही बात समझाई कि तू स्वयं को कर्ता न जानकर अकर्ता मान और एक बार मेरी शरण में आ जा। इस प्रकार तू मेरी शरण होकर मेरे साकार और निराकार स्वरूप को देख क्यों कि सम्पूर्ण सृष्टि का कर्ता–धर्ता मैं एक निराकार ईश्वर ही हूँ; इस प्रकार तू सभी बन्धनों से मुक्त हो जाएगा और मुझको ही प्राप्त होगा –

सर्वधर्मान्परित्यिज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।।

–श्रीमद्भगवद्गीता (18/66)

अर्थात् सम्पूर्ण धर्मों का आश्रय छोड़कर तू केवल मेरी शरण में आ जा। मैं तुझे सम्पूर्ण पापों से मुक्त कर दूंगा, चिन्ता मत कर।

सकृदेव प्रपन्नाय तदास्मीति च याचते।
अभय सर्वभूतेभ्यों ददाम्येतद् वत मम।।

–वाल्मीकि रामायण

जो शरण में आकर मैं तुम्हारा हूँ ऐसा कहकर मुझसे रक्षा की याचना करता है उसे मैं सम्पूर्ण प्राणियों से अभय कर देता हूँ – यह मेरा प्रण है।

इसी प्रकार बाबा जी गुरसिखों को प्रभु की शरण हो जाने के लिए कहते हैं कि एक बार जीव समर्पित भाव से शरणागत हो जाए और अर्न्तमन से यही स्वर मुखरित हो –

तू ही निरंकार, मैं तेरी शरण हूँ, मैंनूं बख्श लो।

ऐसी अवस्था साधक की जब बन जाती है तो भक्त सम्पूर्ण प्राणियों से अभय, स्पष्ट व निश्चिन्त हो जाता है। सभी महापुरुषों ने संसार को यही आवाज दी है कि मानव के जीवन की सार्थकता तभी सिद्ध हो सकती है जब वह यथार्थ का बोध करके मायापति परमात्मा की शरणागति को प्राप्त हो जाता है अर्थात् प्रेम का वातावरण बनाकर एक–दूसरे का सच्चा हितैषी बन जाए। इस अवस्था में अपने हृदय में प्रेमानुभूति लिये जिस तरफ भी दृष्टि जाती है, वह एक निराकार–परमात्मा को देखता है। यह वैसी ही अनुभूति है, जैसी बाबा बुल्लेशाह को इनायत शाह जी की शरण प्राप्त होने से हुई थी –

जां मैं रमज़ इश्क दी पाई, मैना तोता मार गवाई।
अंदर बाहर होई सफ़ाई, जिस वल वेखा यारो यार।

निराकार परमात्मा की शरण में आकर जीव सभी पापों से मुक्त हो सकता है क्यों कि जिस प्रकार माचिस की एक तीली लकड़ियों के बहुत बड़े ढेर को जलाकर राख कर देती है ; उसी प्रकार ज्ञान की अग्नि सम्पूर्ण पापों को तुरन्त नष्ट कर देती है–

ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात्कुरुते तथा।

–श्रीमद्भगवद्गीता (4/37)

कोटि बिप्र बध लागहिं जाहू,
आँए सरन तजउँ नहिं ताहू।
सनमुख होइ जीव मोहि जबहीं,
जन्म कोटि अघ नासहिं तबहीं।।

–रामचरित मानस (सुन्दरकांड–43)

प्रभु किसी भी जीव के अवगुणों को नहीं देखते अपितु शरणागत जीव की श्रद्धा भावना को देखते हैं। प्रभु तो दयालु है जो सभी अपराधों को क्षमा करने वाले हैं। दुराचारी से दुराचारी को भी अपनी शरण में लेने वाले हैं इसलिए जो जीव सद्गुरु के चरणों का आश्रय ले लेता है चौरासी लाख योनियों के भ्रमण से बच जाता है। जो जीव मायापति भगवान के चरणों का आश्रय ले लेते हैं, वे तर जाते हैं।

भक्त को सब चिन्ताएं प्रभु पर छोड़ देनी चाहिए क्योंकि जब तक वह अपना सम्बन्ध संसार से मानता रहेगा चिन्तामुक्त नहीं हो सकता। वास्तव में जीव का उद्धार तभी होगा जब वह सद्गुरु की शरण होकर निर्भय व निश्चिन्त हो जाएगा। ■

भूली बिसरी यादें.......

■ सविता शर्मा (साकेत, दिल्ली)

सद्गुरु की जब कृपा होती है तब ऐसे महात्मा ज़िन्दगी में आते हैं जो हमें जीना सिखाते हैं व सद्गुरु का जीवन में महत्व बताते हैं।

जब कभी शर्मा जी (श्री इन्द्रजीत शर्मा) के साथ प्रचार यात्राओं में जाने का अवसर मिला है तो कुछ न कुछ नया अवश्य सीखने को मिला है।

कई सन्त–महापुरुष झोंपड़ियों व कच्चे मकानों में रहते हैं जहाँ पानी–बिजली की समस्या है। इसके बावजूद जब उनके घर जाने का मौका मिला, वो इस कद्र खुश होते हैं जैसे स्वयं सद्गुरु आ गये हों। अपनी भक्ति में पूर्णतः तल्लीन। कोई गिला–शिकवा नहीं। निराकार प्रभु व सद्गुरु पर अटूट विश्वास। जहाँ हमें एक या आधा घंटा बिताना मुश्किल लगता है, वहाँ वे सन्त–महापुरुष पूरी ज़िन्दगी बिताते हैं, बिना कोई गिला– शिकवा किये।

> "जो आवाज गुरु की आवाज से मिले वो आत्मा की आवाज है। जो आवाज गुरु की बात से न मिले वो मन की आवाज है, क्योंकि मन तो सदा अपनी ही मर्जी करता है"

ब्रह्मलीन भाई साहिब गुरदयाल सिंह जी (बाजपुर), भगत कोटूमल जी, ब्रह्मलीन माता कौशल्या जी मोदी (मालवीय नगर), आदरणीय जे. आर.डी.'सत्यार्थी' जी आदि ने हमारी ज़िन्दगी को संवारने के लिए बहुत योगदान दिया।

मुझे अभी तक याद है। बाबा गुरबचन सिंह जी महाराज व परमममतामयी निरंकारी राजमाता जी की हुजूरी में मालवीय नगर में 12 जनवरी 1974 को शादी हुई।

तब मैं 22 या 23 वर्ष की थी। उन दिनों बाजपुर के सत्संग भवन में भी रहने का अवसर मिला। दिन–रात महात्मा सेवा करवाते व कहा करते, "सविता, किसी के साथ बैठकर निन्दा–चुगली नहीं करना। अगर कहीं ऐसा हो रहा हो तो बहाना बनाकर वहाँ से निकल जाना।"

इसी प्रकार भगत कोटूमल जी ने कहना, "सविता! सन्त निरंकारी पत्रिका या अवतार उपदेश या मिशन की कोई पुस्तक नियमित रूप से पढ़ा करो। खासकर जब दासी गर्भवती होती तो जरूर कहते कि पढ़ा करो। जब धार्मिक पुस्तकें व भक्ति साहित्य पढ़ोगे तो वैसा ही मन बना रहेगा व आने वाले शिशु के संस्कार भी वैसे ही बनेंगे। इस प्रकार गुरमत की बारीकियाँ सिखाते।

एक बार बाजपुर में कहीं सत्संग में जाने का मौका मिला। काफी सन्त–महापुरुष थे। खाने से पहले महापुरुष हाथ धुलवाने के लिए पहले शर्मा जी के पास आए। शर्मा जी हाथ धोने शुरु करते उससे पहले ही भगत जी कहने लगे, "शर्मा! गलती मत करना।" शर्मा जी ने तुरन्त हाथ पीछे कर लिये। आगे भगत जी कहने लगे, "आपके प्रमुख भाई साहिब गुरदयाल सिंह जी हैं, पहले उनके हाथ धुलवाओ अर्थात् सन्तों के आदर–सत्कार का ध्यान रखो।"

एक बार अलमोड़ा जा रहे थे। रास्ते में (भगत जी) प्रश्न पूछने लगे, "अपने गुण बता?" मैंने कहा, "भगत जी, गुण तो कोई हैं नहीं अवगुण हैं।" कहने लगे, "गुण भी तो हैं वो बता।" थोड़ी देर में कहने लगे – "चल शर्मा! तू बता।" शर्मा जी ने भी ऐसा ही कहा। माता रूपवन्ती जी (उनकी धर्मपत्नी) कहने लगी, "आप कह दो हमें नहीं पता, आप (भगत जी) ही बता दो।" हमने कहा, "भगत जी! आप बता दो तो उन्होंने कहा आपने ऐसा ही कहना है।"

गुण–दोष से ऊपर उठकर अहंकाररहित जीवन जीना है।

एक दिन भगत जी के साथ शर्मा जी अजमेर जा रहे थे। उन्होंने रास्ते में पूछा, "शर्मा कैसे पहचानोगे कि यह आत्मा की आवाज है या मन की आवाज? उत्तर भी एक लाईन में देना। इसका समाधान भी भगत जी ने ही किया। कहने लगे", सीधी सी बात है कि जो आवाज गुरू की आवाज से मिले वो आत्मा की आवाज है। जो आवाज गुरू की बात से न मिले वो मन की आवाज है, क्योंकि मन तो सदा अपनी ही मर्जी करता है।

सन् 2001 में नया घर लिया तो भगत कोटूमल जी के चरण डलवाये। सब खाना खा रहे थे। साथ ही बहुत प्रशंसा भी कर रहे थे। थोड़ी देर तक भगत जी सुनते रहे, फिर हम दोनों को बुलाया और कहने लगे, "यह चावल का दाना क्या आपने बनाया है?" हमने कहा, "नहीं।" फिर सब पदार्थों के बारे में पूछने लगे। हमने कहा" नहीं, हमने नहीं बनायी।" फिर कहने लगे, "ईश्वर की बनाई वस्तुएं इकट्ठी करके महापुरुषों को अर्पित कर दिया। इसमें तुम्हारा क्या?" हम उसी समय उनके समक्ष नतमस्तक हो गये। तब कहने लगे, "जब महापुरुष तारीफ करें तो उस समय बचना चाहिए। कहना चाहिए कि हे सत्गुरु! यह सब तेरी कृपा द्वारा सम्भव हुआ है। हमारे में कोई गुण नहीं। इससे हमारी भक्ति बची रहेगी। इस प्रकार जब जीवन में विवेकी सन्त समझाते रहते हैं तो जीवन में अहंकार का आगमन नहीं होता।

सन् 1980 में जब दिल्ली के साकेत क्षेत्र में रहने लगे तो ज़िन्दगी में बहुत उतार–चढ़ाव आए। ऐसे विपरीत समय में माता कौशल्या मोदी जी (मालवीय नगर, दिल्ली) से बहुत हौसला मिला। उन्होंने अपने घर की सुख–सुविधाएं छोड़कर हमारे घर में उबली हुई दाल खाकर, बहुत सारे आशीर्वाद देने और कहना कि यह कठिन समय भी सहज ही निकल जायेगा। सेवा, सुमिरण, सत्संग करते रहो। उन्होंने हर समय सत्संग की ही प्रेरणा दी।

इसी प्रकार ज़िन्दगी में बहुत उतार–चढ़ाव आये। ऐसा भी समय आया कि एक वक्त भूखे भी रहना पड़ा। ऐसे समय भी महापुरुषों ने हमारा हौसला बढ़ाया। जे.आर.डी.'सत्यार्थी' जी भी कहते कि पुत्री! सत्संग नहीं छोड़ना। हर समय शुकराने का भाव बनाये रखना। वे सदा गुरू व निराकार से जोड़ते थे। अगर कुछ तिल–फूल (थोड़ी बहुत) सेवा हो जाती तो महापुरुष ढेरों आशीर्वाद देते थे। इस प्रकार विपरीत परिस्थितियों में भी हौसला बना रहता था। महापुरुषों की आशीर्वाद भरी वाणी तब तो सच नहीं लगती थी, लेकिन समय के साथ सन्तों–महापुरुषों के सब आशीर्वाद सच हुए। यह भी सद्गुरु की कृपा ही है कि? अनेकों अभावों के बावजूद कभी भी मन में ऐसा ध्यान नहीं आता था कि जब कुछ मिलेगा तभी संगत व सेवा करेंगें। सद्गुरु की रहमत से सन्तों–महापुरुषों के आशीर्वाद समयानुसार फलीभूत हुए। अब सद्गुरु की बहुत कृपा है। निराकार से यही प्रार्थना व याचना है कि बच्चों सहित हममें सुमति बनी रहे। सत्संग, सेवा व सुमिरण निष्काम भाव से करते जायें।

अक्सर शर्मा जी कहते हैं – "जो कहे कि मेरा ईष्ट सद्गुरु (बाबा हरदेव सिंह जी महाराज) है, उस भक्त या बच्चे से भी डरकर रहें और उसका पूरा आदर–सत्कार करें।" ●



सीखें अच्छा बोलने का हुनर



■ विकास अरोड़ा (रेवाड़ी, हरियाणा)

अंधे का पुत्र अंधा।" सिर्फ चार शब्द। परिणाम – महाभारत का युद्ध, जिसमें लाखों लोग मारे गये। ये चार शब्द द्रोपदी ने दुर्योधन को तब कहे थे, जब वह इन्द्रप्रस्थ में पांडवों के नये महल को देखने आया था।

महल इस तरह बनाया गया था कि पानी से भरा सरोवर, सपाट फर्श की तरह और पक्का फर्श, सरोवर की तरह दिखता था। दुर्योधन यह बात नहीं जानता था। जैसे ही फर्श समझकर वह आगे बढ़ा, सरोवर के पानी में उसके कपड़े भीग गये। तभी द्रोपदी ने उसे कहा, "अंधे का पुत्र अंधा।" ये चार शब्द दुर्योधन को चुभ गये। इसी अपमान का बदला लेने के लिए उसने महाभारत के युद्ध की रचना की।

बिना सोचे, समझे, बोले गये शब्दों का इतना भयंकर परिणाम इतिहास में कहीं और देखने को नहीं मिलता। सीधी एवं सरल सी शिक्षा यह प्राप्त होती है कि हमें ऐसी भाषा का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए जिससे किसी के दिल को ठेस पहुँचे।

प्रेम से भरे शब्द, सुनने वाले को आत्मिक आनन्द प्रदान करते हैं। यही मीठी बोली बहुत सी समस्याओं का अन्त कर देती है। बात रामायण में वर्णित सीता स्वयंवर की है। जैसे ही भगवान श्री राम ने शिव का धनुष तोड़ा, क्रोध में तमतमाते हुए परशुराम ने राजा जनक के दरबार में प्रवेश किया। ऊँची आवाज में परशुराम जी ने पूछा, "शिव के इस धनुष को तोड़ने की दुष्टता किसने की?" उनका यह रौद्र रूप देखकर सभी भयभीत हो गये।

तभी भगवान श्री राम ने मिठास भरी भाषा में कहा –

नाथ संभु धनु भंजनिहारा,
होइहि केउ एक दास तुम्हारा

अर्थात् हे नाथ, शिवजी के धनुष को तोड़ने वाला आपका ही कोई दास होगा। यह सुनकर परशुराम जी का गुस्सा शान्त हो गया। यहाँ भी जुबान से चन्द शब्द ही कहे गये हैं पर उन शब्दों ने ऐसा असर किया कि सारा मामला पल भर में शान्त हो गया।

भाषा चाहे हिन्दी हो या मराठी, हम क्या बोलते हैं और कैसे बोलते हैं, इसका बहुत महत्व होता है। दिलों पर राज वही करता है, जो अपने मन के भाव सरल शब्दों में, बिना किसी का दिल दुखाए, दूसरों के सामने रखता है।

अच्छे वक्ता के मुख से निकला एक–एक शब्द सुनने वालों को सुकून पहुँचाता है।

कौआ और कोयल दिखने में तो एक जैसे होते हैं परन्तु जब तक बोलते नहीं, तब तक पता नहीं चलता कि कौआ कौन सा है और कोयल कौन सी है। सचमुच, कौए की भाँति 'काँव–काँव' करने की बजाय कोयल की तरह 'कूकना' अच्छा होता है।

प्रभावशाली ढंग से अपनी बात कहने की कला प्रत्येक क्षेत्र में सफलता का मूलमंत्र है। आपके शब्द यह तय करते हैं कि आप क्या हैं और आपके संस्कार कैसे हैं। उत्तम शब्दों का चुनाव करके हम अपने व्यक्तित्व को चार–चाँद लगा सकते हैं। अच्छा बोलने का हुनर सीखने के लिए इन बातों का ध्यान रखें –

● बातचीत को प्रभावशाली बनाने के लिए जरूरी है कि आप जो भी भाषा बोलें, शुद्ध बालें। अपने उच्चारण पर ध्यान दें। 'शाबाश' शब्द को 'साबास' कहने से सुनने वाले पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

● भाषा और लहजे के साथ–साथ आपके हावभाव भी बातचीत में महत्वपूर्ण होते हैं। हाथ हिलाकर बात करना या बात करते समय पैर हिलाना अभद्रता दर्शाता है।

● बातचीत में आसान भाषा का इस्तेमाल करें ताकि दूसरे आपकी बात अच्छी तरह से समझ सकें। ऐसे शब्दों का प्रयोग न करें, जिनका अर्थ समझना मुश्किल हो।

● उतना ही बोलें, जितना जरूरी हो। महान दार्शनिक प्लेटो की बात हमेशा याद रखें – *Wise men talk because they have something to say; fools because they have to say something.* अर्थात् बुद्धिमान व्यक्ति बोलते हैं क्योंकि उनके पास बोलने के लिए कुछ होता है, मूर्ख व्यक्ति बोलते हैं क्यों कि उन्हें बस कुछ बोलना होता है।

बुद्धिमान व्यक्ति बोलते हैं क्योंकि उनके पास बोलने के लिए कुछ होता है, मूर्ख व्यक्ति बोलते है क्यों कि उन्हें बस कुछ बोलना होता है

● अगर किसी बड़े व्यक्ति से बात कर रहे हैं तो आदरसूचक शब्दों का प्रयोग करें।

● बातचीत के समय मर्यादा को नजरअंदाज न करें। गुस्सा आने पर भी चीखें–चिल्लाएं नहीं, आवाज में नरमी बरतें।

● सुनना सीखें यानि एक अच्छे श्रोता बनें। सामने वाले के न सिर्फ शब्दों को सुनें बल्कि उसकी भावनाओं को भी समझने की कोशिश करें।

● अपने बारे में ही बात न करें, दूसरे को भी अपने बारे में बात करने का मौका दें। बातचीत में 'मैं, मेरा, मैंने' का इस्तेमाल जितना कम किया जाये, उतना अच्छा है।

● माहौल के अनुसार बात करें। जन्मदिन के अवसर पर ग़मी का जिक्र करना अथवा ग़मी के अवसर पर खुशियों की बात करना शोभा नहीं देता है। ●

लोकगीत

नेपाली

❐ बी.बहादुर ठाकुर (देहरादून, उत्तराखंड)

आपस मा प्यार गरने हो,
यो कुरा लाई अपनाने हो,
तेरो–मेरो को झगड़ा – सबैले मिटाउने हो........
आपस मा..................

प्रभु ले त एक बनायो, फर्क केन गरदै छौ,
स्यानु ठूलो हो भनी नफरत गरदै छौ,
नफरत लाई दूर गरने हो, यो कुरा लाई..............

तीमी स्यानु जाती हो – म ठूलो जाती हो,
माकुड़ी को जाल मा जस्तो – तीमी फंसदै जान्दै छो,
अभिमान लाई मिटाउने हो, यो कुरा लाई............

एकै पिता हो सबैको – ज्ञान पनी एकै हो,
'ठाकुर' वचन लाई मानो – हामी सबै एकै हो,
सोझो बाटो अपनाने हो, यो कुरा लाई...................

हरियाणवी

❐ सतबीर 'दीवाना' (पानीपत, हरियाणा)

आज आरा सत्गुरु पूरा नफरत का करके पूरा प्यार बरसावै सै
दे कै नै ब्रह्मज्ञान यू सन्त बणावै सै।

हर कस्बे–शहर गाम में एक चर्चा सै बड़ा भारा।
ले अमन–चैन का झंडा, आज समय का सत्गुरु आरा।
सै एक पिता हम सबको यू नू समझावै सै..........

सै इसके हाथ में डोरी ना रहवै पुस्तक कोरी।
यो तो भ्रम मिटा कती सारे इस नाम की खोलै बोरी।
इसी दे सै सबर–सबूरी यू मन झुक जावै सै...........

दरबार सै यो शक्ति का आ सीख ले ढंग भक्ति का।
सेवा, सत्संग, सिमरण सै पक्का साधन मुक्ति का।
जो बीत गया इब और क्यूँ समय गँवावै सै............

आपणा ना यो देश बेगाना, यो महल मुसाफिर खाना।
सै चरण गुरू के प्यारे, झुकले 'सतबीर दीवाना'।
सदा तुही–तुही कहो, अन्त में तोड़ निभावै सै..........

हिन्दुस्तानी

❐ श्रीनिवास (डोला,बागपत, उ.प्र.)

हमने देखी है सत्गुरु की खुदाई रै।
सारी दुनिया दो तलियों में समाई रै।

एक हाथ है धरती तो एक हाथ है अम्बर।
अजब नज़ारा देखा दो हाथों के अन्दर।
दो हाथों में सृष्टि खूंब नचाई रै.................
सारी दुनिया.....................

सूरज–चाँद–सितारे, पर्वत–नदियाँ जल धारे।
तेरी रज़ा में रहकर चलते–फिरते सारे।
कण–कण में देखी वो ज्योति इलाही रै............
सारी दुनिया..............

कहीं पे बिजली चमके कहीं पे अनहद गरजे।
तेरे हुकम से पानी रिमझिम–रिमझिम बरसे।
ठंडी–ठंडी हवा चले पुरवाई रै.............
सारी दुनिया............

जितनी तेरी माया, सबमें तूही समाया।
अपना भेद बताने तू मानव बनकर आया।
हर मानव को मानवता सिखलाई रै.................

तर्ज : सुपने में रात वा आई..............

61 वाँ वार्षिक सन्त समागम
15,16 व 17 नवम्बर 2008 को
समागम मैदान, बुराड़ी रोड, दिल्ली
में आयोजित होगा
– सचिव, सन्त निरंकारी मंडल, दिल्ली–9

सूचना समाचार

विश्व में भाईचारे की भावना प्रबल हो

सद्‌गुरु बाबा जी दूर-देशों की कल्याण यात्रा पर रवाना

❐ श्रीराम प्रजापति द्वारा



दिल्ली, 3 सितम्बर। सद्‌गुरु बाबा हरदेव सिंह जी महाराज ने कहा है कि विश्व के किसी भी देश में रहें परन्तु परस्पर भाईचारे की भावना प्रबल रहनी चाहिए। आप आज रात बुराड़ी रोड स्थित ग्राउण्ड नं. 8 में दूर–देशों की कल्याण यात्रा पर रवाना होने से पूर्व आयोजित विशेष सत्संग समारोह को सम्बोधित कर रहे थे।

सद्‌गुरुदेव हरदेव जी ने कहा कि किसी भी देश में रहें, कोई भी भाषा, पहरावा या संस्कृति हो, मुख्य बात यह है कि भाईचारे की भावना मजबूत होनी चाहिए। कल्याण यात्राओं के माध्यम से यही सन्देश दिया जा रहा है। कोई कहीं भी जाये भक्ति की, प्यार की महक ही छोड़कर आये। आज जरूरत है कि गुरमत का प्रभाव ही छोड़ें और अपने कर्मों को उसी के अनुरूप दिशा–दशा दें।

आपने दूर–देशों में रहने वाले भक्तजनों द्वारा प्रचार–प्रसार में दिये जा रहे योगदान की प्रशंसा करते हुए कहा कि वे भक्तजन काफी समय देकर तथा उत्साहपूर्वक सत्य–सन्देश जन–जन तक पहुँचाने के साथ ही समाज सेवा में भी योगदान दे रहे हैं।

समारोह में सन्त निरंकारी मण्डल के सचिव एवं दूर–देशों में प्रचार व प्रबन्ध व्यवस्था के प्रभारी श्री खेमराज जी चड्ढा ने कहा कि पिछले वर्ष की भाँति इस वर्ष भी सद्‌गुरु बाबा जी दूसरी बार दूर–देशों की यात्रा पर जा रहे हैं। इस 22 दिवसीय यात्रा के दौरान ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, सिंगापुर तथा थाईलैण्ड के भक्तजनों को सद्‌गुरु बाबा जी के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त होगा।

इस अवसर पर सद्‌गुरु बाबा जी का श्री मान सिंह जी 'मान' (प्रभारी, पारिवारिक परामर्श विभाग) तथा पूज्य माता सविन्दर जी का श्री किरपा सागर जी (प्रभारी, प्रकाशन, प्रेस व पब्लिसिटी विभाग) ने अभिनन्दन करके साध संगत की ओर से इस यात्रा के प्रति शुभ भावों को अभिव्यक्त किया।।

कल्याण यात्रा में साथ गये श्री ओम प्रकाश 'ओमी' जी, श्री सन्दीप खिण्डा जी, सुप्रसिद्ध गीतकार श्री जगत सिंह 'जगत' जी एवं श्री वरिन्दर कुमार 'बंटी' जी ने भी अपने भाव व्यक्त किए।

समारोह में अनेक वक्ताओं, गीतकारों एवं कवियों ने भी अपने शुभ भाव व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन श्री सुलेख 'साथी' जी ने किया। इस अवसर पर सद्‌गुरु बाबा जी की जुलाई–अगस्त में हुई यूरोप, यू. के. एवं खाड़ी देशों की 25 दिवसीय कल्याण यात्रा की वीडियो रिपोर्ट भी दिखाई गई, जिसका श्रद्धालुओं ने भरपूर आनन्द प्राप्त किया। ■

निरंकारी राजमाता जी की मथुरावासियों पर कृपावर्षा

मथुरा। भगवान श्री कृष्ण की जन्मस्थली तथा तीन लोक से न्यारी कहलाने वाली मथुरा नगरी के रेलवे इंस्टीट्यूट मैदान में पिछले दिनों निरंकारी राजमाता जी ने सन्त निरंकारी मिशन का सत्य संदेश प्रसारित किया। भारी वर्षा के बावजूद सन्तजनों व धर्मप्रेमियों का उत्साह प्रशंसनीय रहा।

निरंकारी राजमाता जी ने जनमानस से श्री कृष्ण सहित सभी गुरु–पीर–पैग़म्बरों की शिक्षाओं को जीवन में अपनाने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि सब महात्माओं की शिक्षाएं मानव से मानव को जोड़ने के लिए ही हैं इसलिए मनुष्य को विवेक से काम लेना चाहिए तथा विराट स्वरूप का साक्षात्कार करके सफल जीवन व्यतीत करना चाहिए।

प्रेषक–**किशोर कुमार 'स्वर्ण'** (मथुरा)

निरंकारी बाबा जी की विश्व कल्याण यात्रा



❑ ओम प्रकाश 'ओमी'

सद्‌गुरु बाबा हरदेव सिंह जी महाराज, अपने साथ सर्व श्री ओम प्रकाश जी 'ओमी' (प्रमुख – सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली–9), जगत जी (प्रसिद्ध गीतकार), वरिन्दर जी बंटी तथा समर्पित गुरमुख सन्दीप खिंडा जी को साथ लेकर विगत 5 सितम्बर को सिंगापुर, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड तथा थाईलैण्ड, में बसे भक्तजनों को दर्शन देने हेतु दिल्ली से रवाना हुए। 26 सितम्बर 2008 तक चलने वाली यह यात्रा, पत्रिका को अन्तिम रूप दिये जाने तक जारी थी। इस कल्याण यात्रा की प्राप्त रिपोर्ट का हिन्दी रूपान्तर यहाँ पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत किया जा रहा है – सम्पादक

5 सितम्बर को प्रातः 8 बजे पूज्य बाबा जी, अपने सहयोगियों सहित सिंगापुर के लिए रवाना हुये और सायं 4 बजे सिंगापुर पहुँचे। यहाँ उन्हें, हवाई अड्डे पर ही पाँच घंटे व्यतीत करने थे। स्थानीय साध संगत को इस तथ्य की सूचना नहीं दी गयी थी इसके बावजूद 25 महात्मा हवाई अड्डे पर पहुँच गये तथा सद्‌गुरु ब्राबा जी के दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त किया। बाबा जी ने हर एक से अलग–अलग उनकी कुशल–क्षेम पूछी। सद्‌गुरु बाबा जी की भक्तवत्सलता देखकर उनकी खुशी की सीमा न रही।

सायंकाल यहाँ से सिडनी की ओर प्रस्थान किया गया।

<u>सिडनी</u> : साढ़े सात घंटे की लम्बी यात्रा के बाद बाबा जी, अपने सहयोगियों सहित सिडनी पहुँचे। सर्व श्री चनबीर चड्ढा तथा इन्द्रजीत जी ने अनेकों स्थानीय सन्तों सहित सद्‌गुरु बाबा जी व सहयोगियों का हार्दिक स्वागत किया।

हवाई अड्डे से सद्‌गुरुदेव निर्धारित किये गये होटल में पधारे तथा कुछ देर विश्राम करने के बाद, सिडनी के सत्संग भवन में पधारे जहाँ स्वागती कार्यक्रम आयोजित किया गया था।

इस समय भारी वर्षा के कारण, भवन में संगतों का पहुँच पाना असम्भव लगने लगा परन्तु सद्‌गुरु बाबा जी के आशीर्वाद से पूरा कार्यक्रम पूर्व निर्धारित सुनियोजित ढंग से सम्पन्न हुआ। सेवादल के जवानों ने अपनी भूमिका सही ढंग से निभाई तथा स्थानीय संगत के बच्चों व युवाओं ने अनेकों सांस्कृतिक क्रियाकलापों (गीत, डांडिया व भांगड़ा आदि) द्वारा बाबा जी व साथ गये सन्तों का गर्मजोशी से स्वागत किया। हर्ष व सुखद भावों के वशीभूत होकर स्थानीय सन्तजन गीत गा रहे थे और इस प्रकार अपने भावों को मर्यादित ढंग से प्रस्तुत कर रहे थे।

स्वागती कार्यक्रम के बाद भवन के प्रांगण में टैण्टों से बनाये गये पंडाल में एक सत्संग कार्यक्रम आयोजित किया गया।

स्थानीय सगतों ने इस कार्यक्रम में भी हर्षपूर्ण ढंग से मिशन का सन्देश दिया।

अन्त में आशीर्वाद प्रदान करते हुए सद्‌गुरु बाबा जी ने कहा कि तीन वर्ष बाद यहाँ आना हो रहा है, जब कि इससे पहले पाँच वर्ष के अन्तराल पर आना होता रहा है। इस कार्यक्रम द्वारा वह परम्परा टूट गयी है। उन्होंने भक्ति व प्रेम का सन्देश स्थानीय श्रद्धालुओं को दिया। उन्होंने कहा कि प्रेम व भक्ति से ही मिशन का सत्य सन्देश फैलाया जा सकता है।



सात सितम्बर (रविवार) को प्रातः 10.30 से 3 बजे तक क्रॉएशन हॉल में एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें स्थानीय संगतों ने अपने प्रियजनों सहित पधारकर सद्गुरु बाबा जी के दर्शन किये। अनेकों भक्ति गीत प्रस्तुत किये गये। संदीप खिंडा जी ने अंग्रेजी भाषा में प्रभावशाली विचार रखे जब कि वरिन्दर बंटी जी तथा जगत जी ने गीत प्रस्तुत किये। दास (ओम प्रकाश 'ओमी') ने मंच संचालन किया।

अन्त में मिशन का सत्य सन्देश प्रसारित करते हुए सद्गुरु बाबा जी ने कहा कि **हमें संकीर्णताओं से छुटकारा पाकर हर किसी से प्रेम इस आधार पर करना चाहिए कि सबकी रचना एक ही परमात्मा ने की है। मिशन का सिद्धान्त यह है कि जाति, वर्ण, नस्ल आदि की दीवारों को गिराकर, हर किसी को एक–दूसरे के करीब लाया जाये। उन्होंने कहा कि हमें अपने सभी साधनों का उपयोग मानव–मानव के बीच पुल बनाने के लिए करना चाहिए, दीवारों की बजाय। हमें किसी को भी गिराना नहीं चाहिए तथा हर किसी से गुण ग्रहण करने का प्रयास करना चाहिए।**

सत्संग समारोह के बाद एक सादगीयुक्त विवाह भी आयोजित किया गया।

8 सितम्बर को बाबा जी ने स्थानीय श्रद्धालुओं के घरों में पधारकर उनकी भावनाओं को पूरा किया। 9 सितम्बर को भी स्थानीय सन्तजनों ने बाबा जी की पावन उपस्थिति का आनन्द अनुभव किया।

सत्संग समारोह को सम्बोधित करते हुए सद्गुरु बाबा जी ने कहा कि हमारा जीवन महापुरुषों की गरिमा से युक्त होना चाहिए। जीवन स्वयं यदि प्रेरक हो तो अगली पीढ़ी को भी भक्ति की प्रेरणा सहज ही प्राप्त होती रहेगी। पूज्य बाबा जी ने कहा कि सकारात्मक दृष्टिकोण (*Positive View*) रखें। संख्यात्मक (*Quantitative*) के साथ गुणात्मक (*Qualitative*) विस्तार भी होना चाहिए।

बाबा जी ने कहा कि कोई भी सेवा छोटी–बड़ी नहीं होती इसलिए जो भी सेवा मिले, खुशउस्लूबी से करते जाएं।

सदैव यह याद रखें कि हम सबसे पहले गुरसिख हैं, बाद में कुछ और। इससे सम्बन्धों में मधुरता बनी रहेगी। एक–दूसरे को पहल दें, आदर–सत्कार दें। हमेशा प्रेम भाव से युक्त होकर जीवन बिताते जायें।

10 सितम्बर को सांयकाल बाबा जी न्यूजीलैण्ड पधारे। ऑकलैण्ड में आपने कहा कि **अगर सत्संग न मिले तो मन संसार की ओर उन्मुख हो जाता है। सत्संग में जब महापुरुषों के वचन सुनते हैं तो जाग्रति आती है, चेतना मिलती है। यद्यपि आँखें सब कुछ देखती हैं परन्तु इनकी महत्ता तभी है जब सन्तों–महापुरुषों के दीदार हों। इसी प्रकार कानों की महत्ता भी तभी है जब ये महापुरुषों के वचन सुनते हैं। सिर की महत्ता तब होती है, जब यह सन्तों की चरण रज लेना चाहता है। तन, मन, धन की महत्ता तब होती है, जब ये सेवा में लगते हैं।**

बाबा जी ने यहाँ सत्संग भवन का निर्माण होने के लिए भी आशीर्वाद प्रदान किया।

11 सितम्बर को सांयकाल आयोजित सत्संग समारोह को सम्बोधित करते हुए सदगुरु बाबा

जी ने कहा कि आज का इन्सान सन्तजनों की शिक्षाओं को भूल गया है। सन्तजन हर युग में उसे इन शिक्षाओं की याद दिलाते हैं ताकि उसका लोक–परलोक संवर जाये। सन्तजन समझाते हैं कि प्रेम से जियें। प्रेम के बिना मनुष्य जीवित होते हुए भी मृतक के समान है।

बाबा जी ने फरमाया कि जब हर गुरु–पीर–पैग़म्बर की शिक्षाएं एक समान हैं तो फिर इन्सान आपस में नफ़रत ज्यूँ करता है?बाबा जी ने बर्लिन दीवार का उद्धरण देते हुए कहा कि यह विश्व, दीवारों के लिए बहुत छोटा है।

बाबा जी ने कहा – **धर्म जोड़ता है, तोड़ता नहीं। इसके बावजूद आज धर्मों के नामों पर इन्सान को लड़ाया जा रहा है। धर्म, जिसे अध्यात्मिक होना चाहिए था, आज कुछ और ही रूप धारण कर चुका है। महात्मा समझाते हैं कि हमें अपने वास्तविक रूप की पहचान करनी चाहिए। इन्सानियत के गुणों को अपनाकर ही हम प्रभु की सर्वश्रेष्ठ कृति हो सकते हैं।**

कहने को तो इन्सान आज इन्सान की भलाई की प्रार्थनाएं करता दिख रहा है परन्तु भीतर से उसके हृदय में वह भाव नहीं है इसीलिए वह सन्तों–महापुरुषों की शिक्षाओं से दूर निकल गया है। इन्सान को चाहिए कि वह सन्तों–महात्माओं की शिक्षाओं को अपने जीवन में बसाये रखे।

13 सितम्बर को सांयकाल बाबा जी मेलबोर्न (ऑस्ट्रेलिया) की ओर रवाना हुए। हवाई अड्डे पर स्थानीय संगतों ने उन्हें भावपूर्ण विदाई दी।

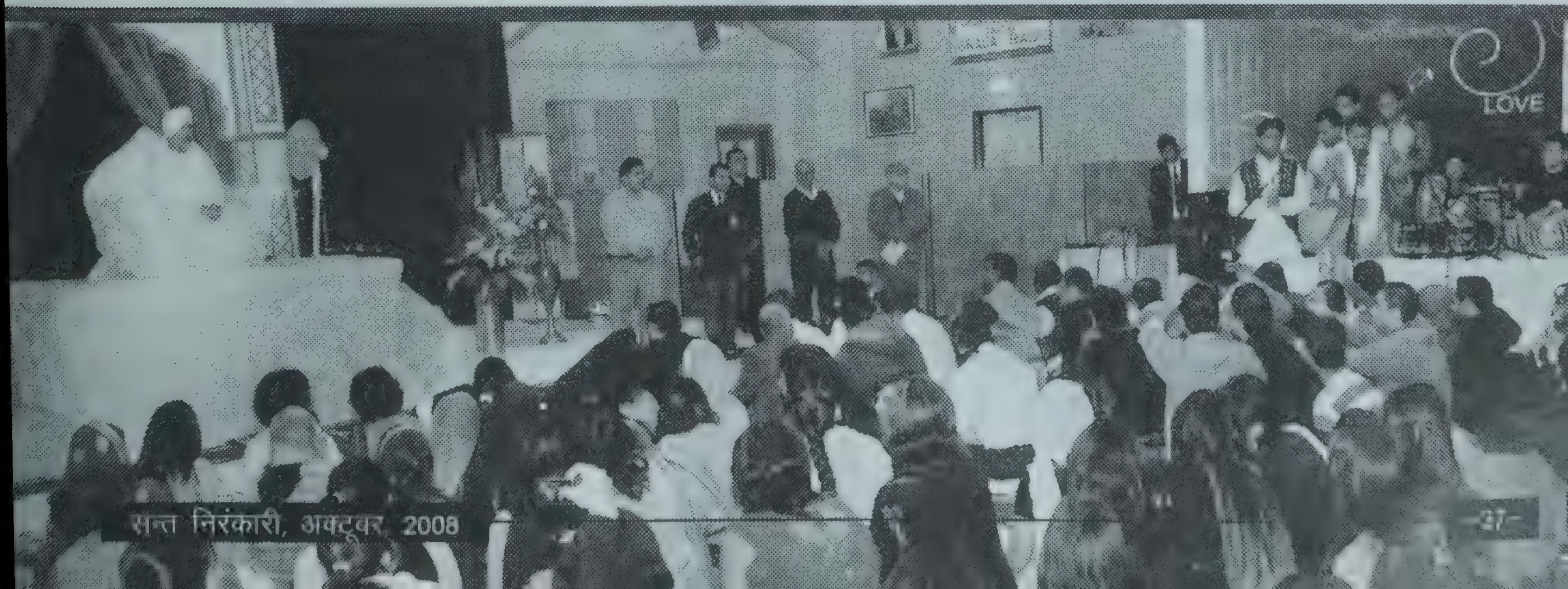
मेलबोर्न के नये सत्संग भवन में आज शाम स्वागती समागम सम्पन्न हुआ। इसमें स्थानीय बहनों व बच्चों ने अपनी भक्तिमय भावनाएं मधुर गीतों के माध्यम से प्रकट कीं। प्रमुख श्री इन्द्रजीत जी ने सेवा कर सकने की शक्ति की मांग सद्गुरु बाबा जी से की।

सन्दीप खिंडा जी ने स्थानीय सन्तों को सद्गुरु बाबा जी के दर्शनों का पावन अवसर प्राप्त करने हेतु शुभकामनाएं प्रकट कीं। उन्होंने कहा कि सद्गुरु का सम्मान करने का सर्वश्रेष्ठ ढंग यह है कि उनके विचारों को जीवन में धारण किया जाए।

अन्त में आशीर्वाद प्रदान करते हुए सद्गुरु बाबा जी ने कहा कि नये भवन के लिए आपकी सेवाएं सराहनीय रही हैं। आने वाले समय में बच्चों के लिए और भी सेवाएं होंगीं। बाबा जी ने कहा कि निष्काम भाव से की गयी सेवाओं का ही महत्व होता है। आपने कहा कि सन्तजनों का प्रेम चाँद–चकोर अथवा पुष्प–भँवरे की भाँति एकतरफा नहीं होता। इनका प्रेम तो दोतरफा होता है। सन्तजन जहाँ कहीं भी रहें, एक–दूसरे के प्रति समर्पित रहते हैं।

यहाँ का मुख्य कार्यक्रम 14 सितम्बर को सम्पन्न हुआ। (जारी) ❐

क्रोध को क्षमा से, विरोध को अनुरोध से, घृणा को दया से, द्वेष को प्रेम से और हिंसा की भावना से जीता जा सकता है।



पत्र-पत्रिकाएं प्रचार की मुख्य साधन हैं, इन्हें घर-घर पहुँचायें

पत्र-पत्रिकाओं के मार्गदर्शन शिविर में गुलाटी जी का आह्वान

❑ **एस. व्ही. लव्हटे** (मुम्बई) द्वारा

मुम्बई, 31 अगस्त। निरंकारी पत्र–पत्रिकाएं 'सन्त निरंकारी', 'एक नज़र' एवं 'हँसती दुनिया' सन्त निरंकरी मिशन के प्रचार–प्रसार की मुख्य साधन हैं। इन्हें घर–घर पहुँचाया जाना चाहिए। ये उद्‌गार यहाँ चैम्बूर स्थित सन्त निरंकारी सत्संग भवन में आयोजित पत्र–पत्रिका मार्गदर्शन शिविर में मुम्बई क्षेत्र के सभी प्रमुख, मुखी, ज्ञान प्रचारक, प्रचारक, सेवादल के क्षेत्रीय संचालक तथा संचालकों का आह्वान करते हुए पत्रिका विभाग के प्रभारी श्री सी. एल. गुलाटी जी ने व्यक्त किए।

शिविर का उद्‌घाटन मुम्बई की क्षेत्रीय प्रभारी श्रीमती कान्ता जी ने दीप प्रज्ज्वलित करके किया। उद्‌घाटन भाषण में उन्होंने कहा कि ब्रह्मलीन गोविन्द फणसे जी के पश्चात मराठी पत्रिका एवं प्रकाशन विभाग के सेवादार महात्मा जिस तन्मयता से सेवा निभा रहे हैं वह अत्यन्त सराहनीय है। इन समर्पित सेवादारों के कारण ही निरन्तर प्रगति हो रही है। सद्‌गुरु बाबा जी कृपा करें कि ये आगे भी इसी प्रकार उत्साहपूर्वक सेवाएं करते रहें।

श्री गुलाटी जी ने 25 से 31 अगस्त के बीच महाराष्ट्र के विभिन्न क्षेत्रों में आयोजित इसी प्रकार के अन्य शिविरों में मार्गदर्शन दिया, जिनमें पुणे, सोलापुर तथा कोल्हापुर सम्मिलित रहे। उन्होंने कहा कि मिशन की आवाज को जन–जन तक पहुँचाने के लिए प्रत्येक पहलू महत्वपूर्ण है। सद्‌गुरुदेव क्या चाहते हैं और मिशन में आने के बाद जिम्मेदारी क्या बनती है, इस बात का अहसास होना चाहिए। ज्ञान लेने के बाद हमने घर में बैठना नहीं बल्कि उस ज्ञान को घर–घर पहुँचाना है। जब हमें प्रचार करने की सेवा प्राप्त होती है तो हमारी जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है। मिशन की सही तस्वीर संसार के सामने प्रस्तुत करना हमारा कर्तव्य है। यह तभी सम्भव है जब हम मिशन के साहित्य का, पत्र–पत्रिकाओं का नित्यप्रति अध्ययन करेंगे। इन सभी शिविरों में श्री विलायतराय जी, प्रभारी पुणे जोन, मराठी पत्रिका के सम्पादक श्री चन्द्रकान्त जाधव एवं श्री सुलेख साथी भी साथ रहे।

आपने कहा कि एक समय था जब पत्रिकाएं हर निरंकारी परिवार में पहुँचाने की बात की जाती थी, लेकिन अब इन्हें जन–जन तक पहुँचाने के निर्देश सद्‌गुरुदेव द्वारा प्राप्त हो रहे हैं। इसलिए अब ये पत्रिकाएं सार्वजनिक रूप में रिश्तेदारों, मित्रों, कारोबारी सम्पर्क, वाचनालयों, ग्रन्थालयों, स्कूल–कॉलेजों यहाँ तक कि पुलिस थानों में भी पहुँचानी चाहिए।

''मिशन की पत्रिकाएं उस स्तर को छू रही हैं जिसकी अपेक्षा की जा रही थी।'' सद्‌गुरु बाबा जी द्वारा की गई इस टिप्पणी पर हर्ष प्रकट करते हुए गुलाटी जी ने कहा कि यद्यपि यह हमारे लिए बड़े गौरव की बात है परन्तु हमने इन पत्रिकाओं को आत्मनिर्भर बनाने की ओर भी बढ़ना है। क्योंकि जिस रूप में ये पत्रिकाएं छप रही हैं, उसका खर्चा बहुत अधिक होने से इसके लिए बहुत सब्सिडी (अंशदान) देनी पड़ रही है। इस कमी को पूरा करने के लिए सद्‌गुरु बाबा जी ने हमें 'सेवा पत्रिका विभाग' के नाम से सेवा का नया साधन दिया है जिसके द्वारा हम पत्रिका विभाग की सेवाओं को हर ब्रांच में प्रचलित रसीद बुकों द्वारा जमा कर सकते हैं। अब आजीवन सदस्यता की अवधि 20 वर्ष रखी गई है। पत्रिकाओं के बढ़ते खर्चे को देखते हुए 20 वर्ष से पूर्व आजीवन सदस्यों द्वारा स्वेच्छा से पुनः चन्दा जमा करवाना प्रशंसनीय होगा।

श्री गुलाटी जी ने जब यह शुभ समाचार दिया कि सद्‌गुरु बाबा जी ने 'एक नज़र' पाक्षिक समाचार पत्र अब मराठी भाषा में भी प्रकाशित करने

का आशीर्वाद प्रदान किया है तो उपस्थित सभी महानुभावों ने तालियों की गड़गड़ाहट से स्वागत किया।

शिविर में सन्त निरंकारी व एक नज़र (पंजाबी) के सम्पादक श्री सुलेख 'साथी' जी ने मिशन की पत्रिकाओं का संक्षिप्त इतिहास प्रस्तुत किया और कहा कि सद्गुरु का सन्देश मानव मात्र तक पहुँचाना हम सबकी जिम्मेदारी है। मिशन की सभी पत्र–पत्रिकाएं पहले हमारे घरों में आनी चाहिए और इनको बहुत ध्यान से पढ़ना भी चाहिए, इससे हमारे ज्ञान में बढ़ोत्तरी होती रहेगी तथा पत्रिकाओं को घर–घर पहुँचाने का उत्साह जाग्रत होगा।

पुणे क्षेत्र के क्षेत्रीय प्रभारी श्री विलायत राय जी ने कहा कि मिशन के अनुयाईयों की संख्या और पत्र–पत्रिकाओं के सदस्यों की संख्या में बहुत बड़ा अन्तर है इसलिए पत्रिकाओं की सदस्य संख्या बढ़ाने के प्रति हमें और भी ध्यान देना होगा। उन्होंने पत्रिका विभाग की सेवा के साथ–साथ बिल्डिंग फण्ड की सेवाओं के प्रति भी जागरूकता पैदा करने पर बल दिया।

इस शिविर के प्रारम्भिक सत्र में सन्त निरंकारी (मराठी) के सम्पादक एवं मराठी प्रकाशन के प्रभारी श्री चन्द्रकान्त जाधव जी ने मराठी पत्रिका के संक्षिप्त इतिहास से अवगत कराया। उन्होंने कहा कि **पत्रिका का स्तर हिन्दी पत्रिका की भाँति निखारने का प्रयास किया जा रहा है।** विषयवस्तु में जो सुधार आ रहा है इसके लिए सह–सम्पादक श्री जगन्नाथ मडकर, हँसती दुनिया के सम्पादक श्री राजेन्द्र थोराट, स्क्रीनिंग कमेटी के सदस्य श्री सुरेश तिर्लोटकर एवं श्री कैलाश कुटे आदि का योगदान है। 'एक नज़र' समाचार पत्र मराठी भाषा में प्रकाशित करने की अनुमति प्राप्त होने पर महाराष्ट्र के मराठी भक्तजनों की ओर से श्री चन्द्रकान्त ने सद्गुरु बाबा जी का धन्यवाद किया और मुम्बई के सभी प्रबन्धकों से सहयोग करने की प्रार्थना की।

शिविर के दौरान हँसती दुनिया (मराठी) के सम्पादक श्री राजेन्द्र थोराट, मराठी साहित्य अवलोकन कमेटी के संयोजक दास (श्री एस. व्ही. लव्हटे) तथा मुम्बई क्षेत्र के मीडिया संयोजक श्री प्रवीण छाबड़ा ने भी निरंकारी साहित्य के प्रसार के लिए अपने भाव व्यक्त किए। मुम्बई क्षेत्र के जनसम्पर्क विभाग के प्रभारी एवं सैक्टर प्रमुख श्री मोहन गुण्डू ने मुम्बई की साध संगत की ओर से सभी का आभार प्रकट किया।

'ऐसे अपनाया सद्गुरु के वचन को'

जैसे ही शिविर में 'सेवा पत्रिका विभाग' का जिक्र हुआ; अनेकों महापुषों ने इसे तुरन्त व्यवहारिक रूप देते हुए इस सेवा में बढ़–चढ़कर योगदान दिया। सबसे पहले जोनल इंचार्ज माता कान्ता जी ने स्वयं 5500 रुपये भेंट करके सभी को प्रेरणा दी। विशेष उल्लेखनीय है कि श्री सदाशिव शिनॉय (क्षेत्रीय संचालक, सेवादल, मुम्बई) ने एक लाख रुपये की सेवा भेंट की। जबकि श्री मनमोहन सिंह–सुरेन्द्र कौर ने 25000 रुपये की सेवा भेंट की। फलस्वरूप श्री डी. एल. काढेकर तथा श्री दिनेश यादव ने दस–दस हजार एवं श्री बाबूभाई पांचाल (क्षेत्रीय संचालक) ने पांच हजार रुपये तथा श्री बुआ सिंह जी ने 5100 रुपये भेंट किए। इसके अतिरिक्त दर्जनों महात्माओं ने अपनी–अपनी सामर्थ्य अनुसार इस सेवा में योगदान देकर लगभग 3 लाख रुपये भेंट किए।

इससे पूर्व पुणे में श्री राम कुमार जी ने पाँच हजार, श्री लखमीचन्द जी ने 1100 रुपये और श्री ताराचन्द जी ने अपने महाबलेश्वर के नये होटल अनारकली के लिए 60 सन्त निरंकारी पत्रिकाएं लगवायीं। सोलापुर के जोनल इंचार्ज श्री इन्द्रपाल सिंह नागपाल ने अपनी सभी पत्रिकाओं का चन्दा पुनः जमा करवाया। महादेव नर्सिंग बरादर, लातूर ने 3500 रु., श्री लक्ष्मण कोरेगर, वडाला ने 1100 रु. दिये। कोल्हापुर में श्री अशोक मोटूमल आहूजा ने परिवार के सभी सदस्यों के नाम 26,000 रु. सेवा पत्रिका विभाग तथा 100 पत्रिकाएं लगवाईं। इन चार शिविरों में उपस्थित प्रतिनिधियों ने लगभग 30 हजार पत्रिकाओं की नई सदस्यता का आश्वासन ही नहीं दिया बल्कि इस पर तुरन्त कार्य भी आरम्भ कर दिया। ☐

ग्राम–खेदा, मुरादनगर (उ.प्र.) के महात्मा बिशम्भर सिंह जी ने अपनी धर्मपत्नियों (ब्रह्मलीन) श्रीमती पार्वती तथा सरोज की स्मृति में सेवा (पत्रिका विभाग) हेतु 2100 रुपये भेंट किये हैं।

पाठक मंच

अगस्त 'क्षमा' विशेषांक प्राप्त हुआ। क्षमा शब्द का विश्लेषण अत्यन्त सारगर्भित लगा और अन्तर्मन से क्षमा भाव को स्वीकारने की प्रेरणा मिली।

'सद्‌गुरु का क्षमा भाव' (रंजना जौहर, दिल्ली) द्वारा अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया गया। **'क्षमा – सात्विक प्रवृत्ति'** ('उपाशक' जी, इंग्लैण्ड) हृदयस्पर्शी था। स्वाति बूंदें, श्री गुरुवचनामृत एवं सम्पादकीय हर बार की तरह प्रेरणादायी सिद्ध हुए। पत्रिका की साज–सज्जा विशेषाकर्षक लगी, जिसे समाज के अन्य वर्गों द्वारा भी सराहा गया।

❑ **भारत भूषण** (खलीलाबाद)

अगस्त 2008 की पत्रिका के मुखपृष्ठ पर बाबा अवतार सिंह जी, बाबा गुरबचन सिंह जी और बाबा हरदेव सिंह जी के चित्र एक साथ देखकर बहुत ही सुन्दर लगा। चित्रों के साथ लिखा था – 'क्षमा सन्त का स्वभाव'। वाकई सन्त–महात्मा के अन्दर ही क्षमा का गुण होता है। बाबा जी कहते हैं कि – *'No Power in the world is as powerful as the power of forgiveness'* (क्षमा की शक्ति से बढ़कर इस विश्व में कोई शक्ति नहीं है)

पत्रिका में लिखा **'क्षमाशील सिर्फ सद्‌गुरु'** (डॉ. वी.एस.राघव, सिकन्द्राबाद), **'क्षमा कितनी बार'** (राम कुमार 'सेवक'), **क्षमा– एक विश्लेषण** (डॉ. बी.एस. मुद्‌गल, रेवाड़ी) में लिखा विषय बहुत अच्छा लगा। उसमें बाबा गुरबचन सिंह जी ने कहा है – *Forget and forgive* (क्षमा करो और भूल जाओ) इसी बात को महाकवि रहीम जी ने अपने दोहे में लिखा है–

क्षमा बड़न को चाहिए छोटन को उत्पात,
क्या विष्णु का घट गया, जो भृगु मारी लात।

❑ **अखिलेश गुप्ता** (सिकरा पठान, बस्ती, उ.प्र.)

जुलाई 08, अंक में प्रकाशित **'जब अमृत पास है तो जहर क्यों खाऊँ?'** (माता कान्ता जी, मुंबई) का साक्षात्कार बहुत अच्छा है। प्रश्नोत्तर का प्रारूप बहुत अच्छा है। ऐसा लगता है कि लेख में अब कोई सवाल रह नहीं गया है। यह एक प्रकार से सम्पूर्ण साक्षात्कार है।

❑ **मधुमति** (शान्तिनगर, बंगलोर)

आपकी यह पत्रिका काफी समय से पढ़ रहा हूँ। धार्मिक पुस्तकों में 'सन्त निरंकारी' वास्तव में 'मील का पत्थर' है। आपके कुशल संपादन एवं अथक परिश्रम का परिचय इसमें प्रकाशित संग्रहणीय रचनाओं से मिलता है। समस्त पत्रिका परिवार को मेरी शुभकामनाएं।

❑ **स्वदेश मण्डावरी** (कवि एवं लेखक)(फरीदाबाद,हरि.)

मैं आपकी पत्रिका की नियमित पाठक हूँ। अपनीमौसी प्रो. नसीम बापू अरब के घर में रहते हुए आपकी पत्रिका पढ़ने का मौका मिलता है।

हर महीने पत्रिका ज्ञान का खजाना लेकर आती है। इससे दिल को बहुत सुकून मिलता है। जीवन की उलझनें सुलझाने में मदद मिलती है।

अगस्त 2008 का 'क्षमा विशेषांक' तो बहुत ही भाया। दिल पर पड़े बोझ को उतारने का काम, इस पत्रिका द्वारा बहुत ही सहज हो गया है।

❑ **प्रो. रेश्मा आझाद पाटील** (सोलापुर, महा.)

दास इस पत्रिका का नियमित पाठक है। दास को 'श्री गुरुवचनामृत' व सम्पादकीय के बाद सबसे अच्छा स्तम्भ 'गुरमत के अनुभव' लगता है, जो कि सत्य घटनाओं पर आधारित होता है।

जून 2008 में लिखा गया **'गुरमत के अनुभव'** (डॉ. प्रद्युम्न भल्ला) सद्‌गुरु बाबा जी की शिक्षाओं पर विश्वास प्रगाढ़ करने वाला बहुत ही प्रेरक लेख था।

'जाग्रति कैसे आयेगी?' (बाल कृष्ण कमला) में बहुत ही सुन्दर उदाहरण देकर ब्रह्मज्ञान प्राप्ति को वरीयता देने की प्रेरणा मानव मात्र को दी गयी। साथ ही **'पाठ्यक्रम से बाहर'** (सुरेन्द्र कथूरिया), **'कैसे–कैसे सिखाते हैं?'** (पुष्पा बजाज) लेख भी पसन्द आये।

निराकार–दातार पत्रिका विभाग के सभी सदस्यों पर अपनी कृपा दृष्टि बनाये रखें, यही कामना है।

❑ **दीपक जेस्वानी** (हिंगनघाट, महा.)



मदनगीर (दिल्ली) में आयोजित सत्संग समारोह को सम्बोधित करती हुई निरंकारी राजमाता जी



'21वीं सदी में अध्यात्म की प्रासंगिकता' पर केन्द्रित, सन्त निरंकारी मिशन द्वारा इलाहाबाद में आयोजित सेमिनार का दृश्य



भुवनेश्वर (उड़ीसा) में आयोजित राज्य स्तरीय रक्तदान शिविर में भाग ले रहे निरंकारी श्रद्धालु

Registered with the Registrar of Newspaper
For India Under RNI Number 723/57

Delhi Postal Regd. No. DL(N)01/0135/06-0
Licence Number U(DN) 25/2006-2008
Licenced to Post Without Pre Payment



ऑकलैण्ड (न्यूजीलैण्ड) में आयोजित विशाल सत्संग समारोह को सम्बोधित करते हुए शान्तिदूत निरंकारी बाबा जी



सिडनी (ऑस्ट्रेलिया) में आयोजित सत्संग समारोह का विहंगम दृश्य



यूरोपियन संसद में भाग लेने के बाद अध्यात्म के प्रचार–प्रसार के प्रति अपना संकल्प दर्शाते निरंकारी सन्त

Posted at IMBC/1
Prescribed Dates 27th & 28th
Dates of Publication : 20th & 2
Advance Month